अय्यूब

अय्यूब एक उत्तम व्यक्ति

1 ऊज नाम के प्रदेश में एक व्यक्ति रहा करता था।उसका
नाम अय्यूब था। अय्यूब एक बहुत अच्छा और
विश्वासी व्यक्ति था। अय्यूब परमेश्वर की उपासना
किया करता था और अय्यूब बुरी बातों से दूर रहा
करता था। 2उसके सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं।
3अय्यूब सात हजार भेड़ों, तीन हजार ऊँटो, एक हजार
बैलों और पाँच सौ गधियों का स्वामी था। उसके पास
बहुत से सेवक थे। अय्यूब पूर्व का सबसे अधिक धनवान
व्यक्ति था।

4अय्यूब के पुत्र बारी–बारी से अपने घरों में एक
दूसरे को खाने पर बुलाया करते थे और वे अपनी
बहनों को भी वहाँ बुलाते थे। 5अय्यूब के बच्चे जब
जेवनार दे चुकते तो अय्यूब बड़े तड़के उठता और
अपने हर बच्चे की ओर से होमबलि अर्पित करता। वह
सोचता, "हो सकता है, मेरे बच्चे अपनी जेवनार में
परमेश्वर के विरुद्ध भूल से कोई पाप कर बैठे हों।"
अय्यूब इसलिये सदा ऐसा किया करता था ताकि उसके
बच्चों को उनके पापों के लिये क्षमा मिल जाये।

6फिर स्वर्गदूतों का यहोवा से मिलने का दिन आया
और यहाँ तक कि शैतान भी उन स्वर्गदूतों के साथ
था। 7यहोवा ने शैतान से कहा, "तू कहाँ रहा?"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर
इधर उधर घूम रहा था। 8इस पर यहोवा ने शैतान से
कहा, "क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब को देखा? पृथ्वी पर
उसके जैसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। अय्यूब एक
खरा और विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना
करता है। और बुरी बातों से सदा दूर रहता है।"

9शैतान ने उत्तर दिया, "निश्चय ही! किन्तु अय्यूब
परमेश्वर का एक विशेष कारण से उपासना करता है!
10तू सदा उसकी, उसके घराने की और जो कुछ उसके
पास है, उसकी रक्षा करता है। जो कुछ वह करता है,
तू उसमें उसे सफल बनाता है। हाँ, तूने उसे आशीर्वाद
दिया है। वह इतना धनवान है कि उसके मवेशी और
उसका रेवड़ सारे देश में हैं।

11किन्तु जो कुछ उसके पास है, उस सब कुछ को
यदि तू नष्ट कर दे तो मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि
वह तेरे मुँह पर ही तेरे विरुद्ध बोलने लगेगा।"

12यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, अय्यूब के पास
जो कुछ है, उसके साथ, जैसा तू चाहता है, कर किन्तु
उसके शरीर को चोट न पहुँचाना"

इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया।

अय्यूब का सब कुछ जाता रहा

13एक दिन, अय्यूब के पुत्र और पुत्रियाँ अपने सबसे
बड़े भाई के घर खाना खा रहे थे और दाखमधु पी रहे
थे। 14तभी अय्यूब के पास एक सन्देशवाहक आया
और बोला, "बैल हल जोत रहे थे और पास ही गधे घास
चर रहे थे 15कि शबा* के लोगों ने हम पर धावा बोल
दिया और तेरे पशुओं को ले गये! मुझे छोड़ सभी दासों
को शबा के लोगों ने मार डाला। आपको यह समाचार
देने के लिये मैं बच कर भाग निकला हूँ!"

16अभी वह सन्देशवाहक कुछ कह ही रहा था कि
अय्यूब के पास दूसरा सन्देशवाहक आया। दूसरे
सन्देशवाहक ने कहा, "आकाश से बिजली गिरी और
आपकी भेड़ें और दास जलकर राख हो गये हैं। आपको
समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल पाया
हूँ!"

17अभी वह सन्देशवाहक अपनी बात कह ही रहा था
कि एक और सन्देशवाहक आ गया। इस तीसरे
सन्देशवाहक ने कहा, "कसदी के लोगों ने तीन टोलियाँ
भेजी थीं जिन्होंने हम पर हमला बोल दिया और ऊँटो
को छीन ले गये और उन्होंने सेवकों को मार डाला।
आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल
पाया हूँ!"

18यह तीसरा दूत अभी बोल ही रहा था कि एक और
सन्देशवाहक आगया। इस चौथे सन्देशवाहक ने कहा,
"आपके पुत्र और पुत्रियाँ सबसे बड़े भाई के घर खा रहे
थे और दाखमधु पी रहे थे। 19तभी रेगिस्तान से अचानक
एक तेज आँधी उठी और उसने मकान को उड़ा कर
ढहा दिया। मकान आपके पुत्र और पुत्रियों के ऊपर आ
पड़ा और वे मर गये। आपको समाचार देने के लिये
केवल मैं ही बच निकल पाया हूँ!"

20अय्यूब ने जब यह सुना तो उसने अपने कपड़े फाड़
डाले और यह दर्शाने के लिये कि वह दुःखी और
व्याकुल है, उसने अपना सिर मुँड़ा लिया। अय्यूब ने तब

धरती पर गिरकर परमेश्वर को दण्डवत किया। 21उसने
कहा: "मेरा जब इस संसार के बीच जन्म हुआ था,
मैं तब नंगा था,मेरे पास तब कुछ भी नहीं था। जब
मैं मरूँगा और यह संसार तजूँगा, मैं नंगा होऊँगा और
मेरे पास में कुछ नहीं होगा। यहोवा ही देता है और
यहोवा ही ले लेता, यहोवा के नाम की प्रशंसा करो!"
22जो कुछ घटित हुआ था, उस सब कुछ के कारण
न तो अय्यूब ने कोई पाप किया और न ही उसने
परमेश्वर को दोष दिया।

शैतान द्वारा अय्यूब को फिर दुःख देना

2 फिर एक दिन, यहोवा से मिलने के लिये स्वर्गदूत
आये। शैतान भी उनके साथ था। शैतान यहोवा से
मिलने आया था। 2यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ
रहा?"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर
इधर उधर घूमता रहा हूँ।" 3इस पर यहोवा ने शैतान से
पूछा, "क्या तू मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान देता रहा है?
उसके जैसा विश्वासी धरती पर कोई नहीं है। सचमुच
वह अच्छा और वह बहुत विश्वासी व्यक्ति है। वह
परमेश्वर की उपासना करता है, बुरी बातों से दूर रहता
है। वह अब भी आस्थावान है। यद्यपि तूने मुझे प्रेरित
किया था कि मैं अकारण ही उसे नष्ट कर दूँ।"
4शैतान ने उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल! एक
व्यक्ति जीवित रहने के लिये, जो कुछ उसके पास है,
सब कुछ दे डालता है। 5सो यदि तू अपनी शक्ति का
प्रयोग उसके शरीर को हानि पहुँचाने में करे तो तेरे
मुँह पर ही वह तुझे कोसने लगेगा!"
6सो यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, मैंने अय्यूब
को तुझे सौंपा, किन्तु तुझे उसे मार डालने की छूट
नहींहै।"
7इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया और
उसने अय्यूब को बड़े दुःखदायी फोड़े दे दिये। ये दुःखदायी
फोड़े उसके पाँव के तलवे से लेकर उसके सिर के
ऊपर तक शरीर में फैल गये थे। 8सो अय्यूब कूड़े की
ढेरी के पास बैठ गया। उसके पास एक ठीकरा था,
जिससे वह अपने फोड़ों को खुजलाया करता था। 9अय्यूब
की पत्नी ने उससे कहा, "क्या परमेश्वर में अब भी
तेरा विश्वास है? तू परमेश्वर को कोस कर मर क्यों
नहीं जाता!"
10अय्यूब ने उत्तर देते हुए अपनी पत्नी से कहा, "तू
तो एक मूर्ख स्त्री की तरह बातें करती है! देख, परमेश्वर
जब उत्तम वस्तुएं देता है, हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं।
सो हमें दुःख को भी अपनाना चाहिये और शिकायत
नहीं करनी चाहिए।" इस समूचे दुःख में भी अय्यूब ने
कोई पाप नहीं किया। परमेश्वर के विरोध में वह कुछ
नहींबोला।

अय्यूब के तीन मित्रों का उससे मिलने आना

11अय्यूब के तीन मित्र थे: तेमानी का एलीपज, शूही
का बिलदद और नामाती का सोपर। इन तीनों मित्रों ने
अय्यूब के साथ जो बुरी घटनाएँ घटी थीं, उन सब के
बारे में सुना। ये तीनों मित्र अपना–अपना घर छोड़कर
आपस में एक दूसरे से मिले। उन्होंने निश्चय किया कि
वे अय्यूब के पास जा कर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट
करें और उसे ढाढस बँधायें। 12किन्तु इन तीनों मित्रों ने
जब दूर से अय्यूब को देखा तो वे निश्चय नहीं कर पाये
कि वह अय्यूब है क्योंकि वह एकदम अलग दिखाई दे
रहा था। वे दहाड़ मार कर रोने लगे। उन्होंने अपने
कपड़े फाड़ डाले। अपने दुःख और अपनी बेचैनी को
दर्शाने के लिये उन्होंने हवा में धूल उड़ाते हुए अपने
अपने सिरों पर मिट्टी डाली। 13फिर वे तीनों मित्र
अय्यूब के साथ सात दिन और सात रात तक भूमि पर
बैठे रहे। अय्यूब से किसी ने एक शब्द तक नहीं
कहा क्योंकि वे देख रहे थे कि अय्यूब भयानक
पीड़ा में था।

अय्यूब का उस दिन को कोसना जब वह जन्मा था

3 तब अय्यूब ने अपना मुँह खोला और उस दिन को
कोसने लगा जब वह पैदा हुआ था। 2-3उसने कहा:
"काश! जिस दिन मैं पैदा हुआ था, मिट जाये। काश!
वह रात कभी न आई होती जब उन्होंने कहा था कि
'एक लड़का पैदा हुआ है!'
4काश! वह दिन अंधकारमय होता, काश! परमेश्वर
उस दिन को भूल जाता, काश! उस दिन प्रकाश न
चमका होता।
5काश! वह दिन अंधकारपूर्ण बना रहता जितना कि
मृत्यु है। काश! बादल उस दिन को घेरे रहते। काश!
जिस दिन मैं पैदा हुआ काले बादल प्रकाश को डरा कर
भगा सकते।
6उस रात को गहरा अंधकार जकड़ ले, उस रात की
गिनती न हो। उस रात को किसी महीने में सम्मिलित न
करो।
7वह रात कुछ भी उत्पन्न न करे। कोई भी आनन्द
ध्वनि उस रात को सुनाई न दे।
8जादूगरों को शाप देने दो, उस दिन को वे शापित
करें जिस दिन मैं पैदा हुआ। वे व्यक्ति हमेशा लिब्यातान
(सागर का दैत्य) को जगाना चाहतेहैं।
9उस दिन को भोर का तारा काला पड़ जाये। वह
रात सुबह के प्रकाश के लिये तरसे और वह प्रकाश
कभी न आये। वह सूर्य की पहली किरण न देख सके।
10क्यों? क्योंकि उस रात ने मुझे पैदा होने से न
रोका। उस रात ने मुझे ये कष्ट झेलने से न रोका।
11मैं क्यों न मर गया जब मैं पैदा हुआ था? जन्म के
समय ही मैं क्यों न मर गया?

12क्यों मेरी माँ ने गोद में रखा? क्यों मेरी माँ की छातियों ने मुझे दूध पिलाया।

13अगर मैं तभी मर गया होता जब मैं पैदा हुआथा तो अब मैं शान्ति से होता। काश! मैं सोता रहता और विश्राम पाता।

14राजाओं और बुद्धिमान व्यक्तियों के साथ जो पृथ्वी पर पहले थे। उन लोगों ने अपने लिये स्थान बनायें, जो अब नष्ट हो कर मिट चुके है।

15काश! मैं उन शासकों के साथ गाड़ा जाता जिन्होंने सोने-चाँदी से अपने घर भरे थे।

16क्यों नहीं मैं ऐसा बालक हुआ जो जन्म लेते ही मर गया हो। काश! मैं एक ऐसा शिशु होता जिसने दिन के प्रकाश को नहीं देखा।

17दुष्ट जन दु:ख देना तब छोड़ते हैं जब वे कब्र में होते हैं और थके जन कब्र में विश्राम पाते हैं।

18यहाँ तक कि बंदी भी सुख से कब्र में रहते है। वहाँ वे अपने पहरेदारों की आवाज नहीं सुनतेहैं।

19हर तरह के लोग कब्र में रहते हैं चाहे वे महत्वपूर्ण हो या साधारण। वहाँ दास अपने स्वामी से छुटकारा पाता है।

20कोई दु:खी व्यक्ति और अधिक यातनाएँ भोगता जीवित क्यों रहें? ऐसे व्यक्ति को जिस का मन कड़वाहट से भरा रहता है क्यों जीवन दिया जाता है?

21ऐसा व्यक्ति मरना चाहता है लेकिन उसे मौत नहीं आती हैं। ऐसा दु:खी व्यक्ति मृत्यु पाने को उसी प्रकार तरसता है जैसे कोई छिपे खजाने के लिये।

22ऐसे व्यक्ति कब्र पाकर प्रसन्न होते हैं और आनन्द मनाते हैं।

23परमेश्वर उनके भविष्य को रहस्यपूर्ण बनाये रखता है और उनकी सुरक्षा के लिये उनके चारों ओर दीवार खड़ी करता है।

24मैं भोजन के समयप्रसन्न होने के बजाय दु:खी आहें भरता हूँ। मेरा विलाप जलधारा की भाँति बाहर फूट पड़ता है।

25मैं जिस डरावनी बात से डरता रहा कि कहीं वहीं मेरे साथ न घट जाये, वही मेरे साथ घट गई। और जिस बात से मैं सबसे अधिक डरा, वही मेरे साथ हो गई।

26न ही मैं शान्त हो सकता हूँ, न ही मैं विश्राम कर सकता हूँ। मैं बहुत ही विपदा में हूँ।"

एलीपज का कथन

4 1-2फिर तेमान के एलीपज ने उत्तर दिया: "यदि कोई व्यक्ति तुझसे कुछ कहना चाहे तो क्या उससे तू बेचैन होगा? मुझे कहना ही होगा!

3"हे अय्यूब, तूने बहुत से लोगों को शिक्षा दीऔर दुर्बल हाथों को तूने शक्ति दी।

4जो लोग लड़खड़ा रहे थे तेरे शब्दों ने उन्हें ढाढ़स बंधाया था। तूने निर्बल पैरों को अपने प्रोत्साहन से सबल किया।

5किन्तु अब तुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है और तेरा साहस टूट गया है। विपदा की मार तुझ पर पड़ी और तू व्याकुल हो उठा।

6तू परमेश्वर की उपासना करता है, सो उस पर भरोसा रख। तू एक भला व्यक्ति है सो इसी को तू अपनी आशा बना ले।

7अय्यूब, इस बात को ध्यान में रख कि कोई भी सज्जन कभी नहीं नष्ट किये गये। निर्दोष कभी भी नष्ट नहीं किया गया है।

8मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो कष्टों को बढ़ाते हैं और जो जीवन को कठिन करतेहैं। किन्तु वे सदा ही दण्ड भोगते हैं।

9परमेश्वर का दण्ड उन लोगों को मार डालताहै, और उसका क्रोध उन्हें नष्ट करता है।

10दुर्जन सिंह की तरह गुर्राते और दहाड़ते हैं, किन्तु परमेश्वर उन दुर्जनों को चुप करताहै। परमेश्वर उनके दाँत तोड़ देता है।

11बुरे लोग उन सिंहों के समान होते हैं जिन के पास शिकार के लिये कुछ भी नहीं होता। वे मर जाते हैं और उनके बच्चे इधर-उधर बिखर जाते हैं, और वे मिट जाते हैं।

12मेरे पास एक सन्देश चुपचाप पहुँचाया गया, और मेरे कानों में उसकी भनक पड़ी।

13जिस तरह रात का बुरा स्वप्न नींद उड़ा देताहै, ठीक उसी प्रकार मेरे साथ में हुआ है।

14मैं भयभीत हुआ और काँपने लगा। मेरी सब हड्डियाँ हिल गई।

15मेरे सामने से एक आत्मा जैसी गुजरी जिससे मेरे शरीर में रोंगटे खड़े हो गये।

16वह आत्मा चुपचाप ठहर गया किन्तु मैं नहीं जान सका कि वह क्या था। मेरी आँखों के सामने एक आकृति खड़ी थी, और वहाँ सन्नाटा सा छाया था। फिर मैंने एक बहुत ही शान्त ध्वनि सुनी।

17'मनुष्य परमेश्वर से अधिक उचित नहीं हो सकता। अपने रचयिता से मनुष्य अधिक पवित्र नहीं हो सकता।

18परमेश्वर अपने स्वर्गीय सेवकों तक पर भरोसा नहीं कर सकता। परमेश्वर को अपने दूतों तक में दोष मिल जातें हैं।

19सो मनुष्य तो और भी अधिक गया गुजरा है। मनुष्य तो कच्चे मिट्टी के घरौंदों में रहते हैं। इन मिट्टी के घरौंदों की नींव धूल में रखी गई हैं। इन लोगों को उससे भी अधिक आसानी से मसल कर मार दिया जाता है, जिस तरह भुनगों को मसल कर मारा जाता है।

20लोग भोर से सांझ के बीच में मर जाते हैं किन्तु उन पर ध्यान तक कोई नहीं देता है। वे मर जाते हैं और सदा के लिये चले जाते हैं।

21उनके तम्बूओं की रस्सियाँ उखाड़ दी जाती हैं, और ये लोग विवेक के बिना मर जाते हैं।'

5 "अय्यूब, यदि तू चाहे तो पुकार कर देख ले किन्तु तुझे कोई भी उत्तर नहीं देगा। तू किसी भी स्वर्गदूत की ओर मुड़ नहीं सकताहै।

2मूर्ख का क्रोध उसी को नष्ट कर देगा। मूर्ख की तीव्र भावनायें उसी को नष्ट कर डालेंगी।

3मैंने एक मूर्ख को देखा जो सोचता था कि वह सुरक्षित है। किन्तु वह एकाएक मर गया।

4ऐसे मूर्ख व्यक्ति की सन्तानों की कोई भी सहायता न कर सका।न्यायालय में उनको बचाने वाला कोई न था।

5उस की फसल को भूखे लोग खा गये। यहाँ तक कि वे भूखे लोग काँटों की झाड़ियों के बीच उगे अन्न कण को भी उठा ले गये। जो कुछ भी उसके पास था उसे लालची लोग उठा ले गये।

6बुरा समय मिट्टी से नहीं निकलता है, न ही विपदा मैदानों में उगती है।

7मनुष्य का जन्म दु:ख भोगने के लिए हुआ है। यह उतना ही सत्य है जितना सत्य है कि आग से चिंगारी ऊपर उठती है।

8किन्तु अय्यूब, यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं परमेश्वर के पास जाकर अपना दुखड़ा कह डालता।

9लोग उन अद्भुत भरी बातों को जिन्हें परमेश्वर करता है, नहीं समझते हैं। ऐसे उन अद्भुत कर्मो का जिसे परमेश्वर करता है, कोई अन्त नहीं है।

10परमेश्वर धरती पर वर्षा को भेजता है, और वही खेतों में पानी पहुँचाया करता है।

11परमेश्वर विनम्र लोगों को ऊपर उठाता है, और दु:खी जन को अति प्रसन्न बनाता है।

12परमेश्वर चालाक व दुष्ट लोगों के कुचक्र को रोक देता है। इसलिये उनको सफलता नहीं मिला करती।

13परमेश्वर चतुर को उसी की चतुराई भरी योजना में पकड़ता है। इसलिए उनके चतुराई भरी योजनाएं सफल नहीं होती।

14वे चालाक लोग दिन के प्रकाश में भी ठोकरें खाते फिरते हैं। यहाँ तक कि दोपहर में भी वे रास्ते का अनुभव रात के जैसे करते हैं।

15परमेश्वर दीन व्यक्ति को मृत्यु से बचाता है और उन्हें शक्तिशाली चतुर लोगों की शक्ति से बचाता है।

16इसलिए दीन व्यक्ति को भरोसा है। परमेश्वर बुरे लोगों को नष्ट करेगा जो खरे नहीं हैं।

17वह मनुष्य भाग्यवान है, जिसका परमेश्वर सुधार करता है इसलिए जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर तुम्हें दण्ड दे रहा तो तुम अपना दु:खड़ा मत रोओ।

18परमेश्वर उन घावों पर पट्टी बान्धता है जिन्हें उसने दिया है। वह चोट पहुँचाता है किन्तु उसके ही हाथ चंगा भी करते हैं।

19वह तुझे छ: विपत्तियों से बचायेगा। हाँ! सातों विपत्तियों में तुझे कोई हानि न होगी।

20अकाल के समय परमेश्वर तुझे मृत्यु से बचायेगा और परमेश्वर युद्ध में तेरी मृत्यु से रक्षा करेगा।

21जब लोग अपने कठोर शब्दों से तेरे लिये बुरी बात बोलेंगे, तब परमेश्वर तेरी रक्षा करेगा। विनाश के समय तुझे डरने की आवश्यकता नहीं होगी।

22विनाश और भुखमरी पर तू हँसेगा और तू जंगली जानवरों से कभी भयभीत न होगा।

23तेरी वाचा परमेश्वर के साथ है यहाँ तक कि मैदानों की चट्टाने भी तेरी वाचा में भाग लेती है। जंगली पशु भी तेरे साथ शान्ति रखते हैं।

24तू शान्ति से रहेगा क्योंकि तेरा तम्बू सुरक्षित है। तू अपनी सम्पत्ति को सम्भालेगा और उसमें से कुछ भी खोया हुआ नहीं पायेगा।

25तेरी बहुत सन्तानें होंगी और वे इतनी होंगी जितनी घास की पत्तियाँ पृथ्वी पर हैं।

26तू उस पके गेहूँ जैसा होगा जो कटनी के समय तक पकता रहता है। हाँ, तू पूरी वृद्ध आयु तक जीवित रहेगा।

27अय्यूब, हमने ये बातें पढ़ी हैं और हम जानते हैं कि ये सच्ची हैं। अत: अय्यूब सुन और तू इन्हें स्वयं अपने आप जान।"

6 1-2फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा, "यदि मेरी पीड़ा को तौला जा सके और सभी वेदनाओं को तराजू में रख दिया जाये, तभी तुम मेरी व्यथा को समझ सकोगे।

3मेरी व्यथा समुद्र की समूची रेत से भी अधिक भारी होंगी। इसलिये मेरे शब्द मूखर्तापूर्ण लगते हैं।

4सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बाण मुझ में बिधेहैं और मेरा प्राण उन बाणों के विष को पिया करता है। परमेश्वर के वे भयानक शस्त्र मेरे विरुद्ध एक साथ रखी हुई हैं।

5तेरे शब्द कहने के लिये आसान हैं जब कुछ भी बुरा नहीं घटित हुआ है। यहाँ तक कि बनैला गधा भी नहीं रेंकता यदि उसके पास घास खाने को रहे और कोई भी गाय तब तक नहीं रम्भाती जब तक उस के पास चरने के लिये चारा है।

6भोजन बिना नमक के बेस्वाद होता है और अण्डे की सफेदी में स्वाद नहीं आता है।

7इस भोजन को छूने से मैं इन्कार करता हूँ। इस प्रकार का भोजन मुझे तंग कर डालता है। मेरे लिये तुम्हारे शब्द ठीक उसी प्रकार के हैं।

8काश! मुझे वह मिल पाता जो मैंने माँगा है। काश! परमेश्वर मुझे दे देता जिसकी मुझे कामना है।

9काश! परमेश्वर मुझे कुचल डालता और मुझे आगे बढ़ कर मार डालता।

10यदि वह मुझे मारता है तो एक बात का चैन मुझे रहेगा, अपनी अनन्तत: पीड़ा में भीमुझे एक बात की प्रसन्नता रहेगा कि मैंने कभी भी अपने पवित्र के आदेशों पर चलने से इन्कार नहीं किया।

11मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है अत: जीते रहने की आशा मुझे नहीं है। मुझ को पता नहीं कि अंत में मेरे साथ क्या होगा? इसलिये धीरज धरने का मेरे पास कोई कारण नहीं है।

12मैं चट्टान की भाँति सुदृढ़ नहीं हूँ। न ही मेरा शरीर काँसे से रचा गया है।

13अब तो मुझमें इतनी भी शक्ति नहीं कि मैं स्वयं को बचा लूँ। क्यों? क्योंकि मुझ से सफलता छीन ली गई है।

14क्योंकि वह जो अपने मित्रों के प्रति निष्ठा दिखाने से इन्कार करता है। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का भी अपमान करता है।

15किन्तु मेरे बन्धुओं, तुम विश्वासयोग्य नहीं रहे। मैं तुम पर निर्भर नहीं रह सकता हूँ। तुम ऐसी जलधाराओं के सामान हो जो कभी बहती हैं और कभी नहीं बहती है। तुम ऐसी जलधाराओं के समान हो जो उफनती रहती है।

16जब वे बर्फ से और पिघलते हुए हिम सा रूँध जाती है।

17और जब मौसम गर्म और सूखा होता है तब पानी बहना बन्द हो जाता है, और जलधाराऐं सूख जाती हैं।

18व्यापारियों के दल मरुभूमि में अपनी राहों से भटक जाते हैं और वे लुप्त हो जाते हैं।

19तेमा के व्यापारी दल जल को खोजते रहे और शबा के यात्री आशा के साथ देखतेरहे।

20वे आश्वत थे कि उन्हे जल मिलेगा किन्तु उन्हें निराशा मिली।

21अब तुम उन जलधाराओं के समान हो। तुम मेरी यातानाओं को देखते हो और भयभीतहो।

22क्या मैंने तुमसे सहायता माँगी? नहीं। किन्तु तुमने मुझे अपनी सम्मति स्वतंत्रता पूर्वक दी।

23क्या मैंने तुमसे कहा कि शत्रुओं से मुझे बचा लो और क्रूर व्यक्तियों से मेरी रक्षा करो।

24अत: अब मुझेशिक्षा दो और मैं शान्त हो जाऊँगा। मुझे दिखा दो कि मैंने क्या बुरा किया है।

25सच्चे शब्द सशक्त होते हैं किन्तु तुम्हारे तर्क कुछ भी नहीं सिद्ध करते।

26क्या तुम मेरी आलोचना करने की योजनाऐं बनाते हो? क्या तुम इससे भी अधिक निराशापूर्ण शब्द बोलोगे?

27यहाँ तक कि तुम जुऐ में उन बच्चों की वस्तुओं को छीनना चाहते हो, जिनके पिता नहीं हैं। तुम तो अपने निज मित्र को भी बेच डालोगे।

28किन्तु अब मेरे मुख को पढ़ो। मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा।

29अत:, अपने मन को अब परिवर्तित करो। अन्यायी मत बनो, फिर से जरा सोचो कि मैंने कोई बुरा काम नहीं किया है।

30मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। मुझको भले और बुरे लोगों की पहचान है।"

7 अय्यूब ने कहा, "मनुष्य को धरती पर कठिन संघर्ष करना पड़ताहै। उसका जीवन भाड़े के श्रमिक के जीवन जैसा होता है।

2मनुष्य उस भाड़े के श्रमिक जैसा है जो तपते हुए दिन में मेहनत करने के बाद शीतल छाया चाहता है और मजदूरी मिलने के दिन की बाट जोहता रहता है।

3महीने दर महीने बेचैनी के गुजर गये हैं और पीड़ा भरी रात दर रात मुझे दे दी गई है।

4जब मैं लेटता हूँ, मैं सोचा करता हूँ कि अभी और कितनी देर है मेरे उठने का? यह रात घसीटती चली जा रही है। मैं छटपटाता और करवट बदलता हूँ, जब तक सूरज नहीं निकल आता।

5मेरा शरीर कीड़ों और धूल से ढका हुआ है। मेरी त्वचा चिटक गई है और इसमें रिसते हुऐ फोड़े भर गये हैं।

6मेरे दिन जुलाहे की फिरकी से भी अधिक तीव्र गति से बीत रहें हैं। मेरे जीवन का अन्त बिना किसी आशा के हो रहा है।

7हे परमेश्वर, याद रख, मेरा जीवन एक फूँक मात्र है। अब मेरी आँखे कुछ भी अच्छा नहीं देखेंगी।

8अभी तू मुझको देख रहा है किन्तु फिर तू मुझको नहीं देख पायेगा। तू मुझको ढूंढेगा किन्तु तब तक मैं जा चुका होऊँगा।

9एक बादल छुप जाता है और लुप्त हो जाता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति जो मर जाता है और कब्र में गाड़ दिया जाता है, वह फिर वापस नहीं आता है।

10वह अपने पुराने घर को वापस कभी भी नहीं लौटेगा। उसका घर उसको फिर कभी भी नहीं जानेगा।

11अत: मैं चुप नहीं रहूँगा। मैं सब कह डालूँगा। मेरी आत्मा दुखित है और मेरा मन कटुता से भरा है, अत: मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा।

12हे परमेश्वर, तू मेरी रखवाली क्यों करता है? क्या मैं समुद्र हूँ, अथवा समुद्र का कोई दैत्य?

13जब मुझ को लगता है कि मेरी खाट मुझे शान्ति देगी और मेरा पलंग मुझे विश्राम व चैन देगा।

14हे परमेश्वर, तभी तू मुझे स्वप्न में डराता है, और तू दर्शन से मुझे घबरा देता है।

15इसलिए जीवित रहने से अच्छा मुझे मर जाना ज्यादा पसन्द है।

16मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ। मेरी आशा टूट चुकी है। मैं सदैव जीवित रहना नहीं चाहता। मुझे अकेला छोड़ दे। मेरा जीवन व्यर्थ है।

17हे परमेश्वर, मनुष्य तेरे लिये क्यों इतना महत्वपूर्ण है? क्यों तुझे उसका आदर करना चाहिये? क्यों मनुष्य पर तुझे इतना ध्यान देना चाहिये?

18हर प्रात: क्यों तू मनुष्य के पास आता है और हर क्षण तू क्यों उसे परखा करता है?

19हे परमेश्वर, तू मुझसे कभी भी दृष्टि नहीं फेरता है और मुझे एक क्षण के लिये भी अकेला नहीं छोड़ता है।

20हे परमेश्वर, तू लोगों पर दृष्टि रखता है। यदि मैंने पाप किया, तब मैं क्या कर सकताहूँ? तूने मुझको क्यों निशाना बनाया है? क्या मैं तेरे लिये कोई समस्या बना हूँ?

21क्यों तू मेरी गलतियों को क्षमा नहीं करता और मेरे पापों को क्यों तू माफ नहीं करता है? मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा और कब्र में चला जाऊँगा। जब तू मुझे ढूँढेगा किन्तु तब तक मैं जा चुका होऊँगा।”

8 इस के बाद शूह प्रदेश के बिलदद ने उत्तर देते हुए कहा, 2“तू कब तक ऐसी बातें करता रहेगा? तेरे शब्द तेज आँधी की तरह बह रहे हैं।

3परमेश्वर सदा निष्पक्ष है। न्यायपूर्ण बातों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर कभी नहीं बदलता है।

4अत: यदि तेरी सन्तानों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है तो, उसने उन्हें दण्डित किया है। अपने पापों के लिये उन्हें भुगतना पड़ा है।

5किन्तु अब अय्यूब, परमेश्वर की ओर दृष्टि कर और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से उस की दया पाने के लिये विनती कर।

6यदि तू पवित्र है, और उत्तम है तो वह शीघ्र आकर तुझे सहारा और तुझे तेरा परिवार और वस्तुऐं तुझे लौटायेगा।

7जो कुछ भी तूने खोया वह तुझे छोटी सी बात लगेगी। क्यों? क्योंकि तेरा भविष्य बड़ा ही सफल होगा।

8उन वृद्ध लोगों से पूछ और पता कर कि उनके पूर्वजों ने क्या सीखा था।

9क्योंकि ऐसा लगता है जैसे हम तो बस कल ही पैदा हुए हैं, हम कुछ नहीं जानते। परछाई की भाँति हमारी आयु पृथ्वी पर बहुत छोटी है।

10हो सकता है कि वृद्ध लोग तुझे कुछ सिखा सकें। हो सकता है जो उन्होंने सीखा है वे तुझे सिखा सकें।”

11बिलदद ने कहा, “क्या सूखी भूमि में भोजपत्र का वृक्ष बढ़ कर लम्बा हो सकता है? नरकुल बिना जल के बढ़ सकता है?

12नहीं, यदि पानी सूख जाता है तो वे भी मुरझा जायेंगे। उन्हें काटे जाने के योग्य काट कर काम में लाने को वे बहुत छोटे रह जायेंगे।

13वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है, नरकुल की भाँति होता है। वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है कभी आशावान नहीं होगा।

14उस व्यक्ति का विश्वास बहुत दुर्बल होता है। वह व्यक्ति मकड़ी के जाले के सहारे रहता है।

15यदि कोई व्यक्ति मकड़ी के जाले को पकड़ताहै किन्तु वह जाला उस को सहारा नहीं देगा।

16वह व्यक्ति उस पौधे के समान है जिसके पास पानी और सूर्य का प्रकाश बहुतायात से है। उसकी शाखाऐं बगीचे में हर तरफ फैलती हैं।

17वह पत्थर के टीले के चारों ओर अपनी जड़े फैलाता है और चट्टान में उगने के लिये कोई स्थान ढूँढता है।

18किन्तु जब वह पौधा अपने स्थान से उखाड़ दिया जाता है, तो कोई नहीं जान पाता कि वह कभी वहाँ था।

19किन्तु वह पौधा प्रसन्न था, अब दूसरेपौधे वहाँ उगेंगे, जहाँ कभी वह पौधा था।

20किन्तु परमेश्वर किसी भी निर्दोष व्यक्ति को नहीं त्यागेगा और वह बुरेव्यक्ति को सहारा नहीं देगा।

21परमेश्वर अभी भी तेरे मुख को हँसी से भर देगा और तेरे ओठों को खुशी से चहकायेगा।

22और परमेश्वर तेरे शत्रुओं को लज्जित करेगा और वह तेरे शत्रुओं के घरों को नष्ट करदेगा।”

9 फिर अय्यूब ने उत्तर दिया:
2“हाँ, मैं जानता हूँ कि तू सत्य कहता है किन्तु मनुष्य परमेश्वर के सामने निर्दोष कैसे हो सकता है?

3मनुष्य परमेश्वर से तर्क नहीं कर सकता। परमेश्वर मनुष्य से हजारों प्रश्न पूछ सकता है और कोई उनमें से एक का भी उत्तर नहीं दे सकता है।

4परमेश्वर का विवेक गहन है, उसकी शक्ति महान है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो परमेश्वर से झगड़े और हानि न उठाये।

5जब परमेश्वर क्रोधित होता है, वह पर्वतों को हटा देता है और वे जान तक नहीं पाते।

6परमेश्वर पृथ्वी को कँपाने के लिये भूकम्प भेजता है। परमेश्वर पृथ्वी की नींव को हिला देता है।

7परमेश्वर सूर्य को आज्ञा दे सकता है और उसे उगने से रोक सकता हैं। वह तारों को बन्द कर सकता है ताकि वे न चमकें।

8केवल परमेश्वर ने आकाशों की रचना की। वह सागर की लहरों पर विचरण कर सकताहै।

9परमेश्वर ने सप्तर्षी, मृगशिरा और कचपचिया तारों को बनाया है। उसने उन ग्रहों को बनाया जो दक्षिण का आकाश पार करते हैं।

10परमेश्वर ऐसे अद्भुत कर्म करता है जिन्हें मनुष्य नहीं समझ सकता। परमेश्वर के महान आश्चर्यकर्मों का कोई अन्त नहीं है।

11परमेश्वर जब मेरे पास से निकलता है, मै उसे देख नहीं पाता हूँ। परमेश्वर जब मेरी बगल से निकल जाता है। मै उसकी महानता को समझ नहीं पाता।

12यदि परमेश्वर छीनने लगता है तो कोई भी उसे रोक नहीं सकता। कोई भी उस से कह नहीं सकता कि ‘तू क्या कर रहा है?’

13परमेश्वर अपने क्रोध को नहीं रोकेगा। यहाँ तक कि राहाब दानव (सागर का दैत्य) के सहायक भी परमेश्वर से डरते हैं।

14अत: परमेश्वर से मैं तर्क नहीं कर सकता। मैं नहीं जानता कि उससे क्या कहा जाये।

15मैं यद्यपि निर्दोष हूँ किन्तु मैं परमेश्वर को एक उत्तर नहीं दे सकता। मैं बस अपने न्यायकर्ता (परमेश्वर) से दया की याचना कर सकता हूँ।

16यदि मैं उसे पुकारुँ और वह उत्तर दे, तब भी मुझे विश्वास नहीं होगा कि वह सचमुच मेरी सुनता है।

17परमेश्वर मुझे कुचलने के लिये तूफान भेजेगा और वह मुझे अकारण ही और अधिक घावों को देगा।

18परमेश्वर मुझे फिर सांस नहीं लेने देगा। वह मुझे और अधिक यातना देगा।

19मैं परमेश्वर को पराजित नहीं कर सकता। परमेश्वर शक्तिशाली है। मैं परमेश्वर को न्यायालय में नहीं ले जा सकता और उसे अपने प्रति मैं निष्पक्ष नहीं बनासकता। परमेश्वर को न्यायालय में आने के लिये कौन विवश कर सकता है?

20मैं निर्दोष हूँ किन्तु मेरा भयभीत मुख मुझे अपराधी कहेगा। अत: यद्यपि मैं निरपराधी हूँ किन्तु मेरा मुख मुझे अपराधी घोषित करता है।

21मैं पाप रहित हूँ किन्तु मुझे अपनी ही परवाह नहीं है। मैं स्वयं अपने ही जीवन से घृणा करता हूँ।

22मैं स्वयं से कहता हूँ हर किसी के साथ एक सा ही घटित होता है। निरपराध लोग भी वैसे ही मरते हैं जैसे अपराधी मरते हैं। परमेश्वर उन सबके जीवन का अन्त करताहै।

23जब कोई भयंकर बात घटती है और कोई निर्दोष व्यक्ति मारा जाता है तो क्या परमेश्वर उस के दु:ख पर हँसता है?

24जब धरती दुष्ट जन को दी जाती है तो क्या मुखिया को परमेश्वर अंधा कर देता है? यदि यह परमेश्वर ने नहीं किया तो फिर किसने किया है?

25किसी तेज धावक से तेज मेरे दिन भाग रहे हैं। मेरे दिन उड़ कर बीत रहे हैं और उनमें कोई प्रसन्नता नहीं है।

26वेग से मेरे दिन बीत रहे हैं जैसे श्री–पत्र की नाव बही चली जाती है, मेरे दिन टूट पड़तेहै ऐसे जैसे उकाब अपने शिकार पर टूट पड़ताहो!

27यदि मैं कहूँ कि मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा, अपना दु:ख भूल जाऊँगा और उदासी छोड़कर हँसने लगूँगा।

28इससे वास्तव में कोई भी परिवर्तन नहीं होताहै। पीड़ा मुझे अभी भी भयभीत करती है।

29मुझे तो पहले से ही अपराधी ठहराया जा चुका है, सो मैं क्यों जतन करता रहूँ? मैं तो कहता हूँ ‘भूल जाओ इसे।’

30चाहे मैं अपने आपको हिम से धो लूँ और यहाँ तक की अपने हाथ साबुन से साफ कर लूँ!

31फिर भी परमेश्वर मुझे घिनौने गर्त में धकेल देगा जहाँ मेरे वस्त्र तक मुझसे घृणा करेंगे।

32परमेश्वर, मुझ जैसा मनुष्य नहीं है। इसलिए उस को मैं उत्तर नहीं दे सकता। हम दोनों न्यायालय में एक दूसरे से मिल नहीं सकते।

33काश! कोई बिचौलिया होता जो दोनों तरफ की बातें सुनता। काश! कोई ऐसा होता जो हम दोनों का न्याय निष्पक्ष रूप से करता।

34काश! कोई जो परमेश्वर से उस की दण्ड की छड़ी को ले। तब परमेश्वर मुझे और अधिक भयभीत नहीं करेगा।

35तब मैं बिना डरे परमेश्वर से वह सब कह सकूँगा, जो मैं कहना चाहता हूँ।

10 किन्तु हाय, अब मैं वैसा नहीं कर सकता। मुझ को स्वयं अपने जीवन से घृणा हैं अत: मैं मुक्त भाव से अपना दुखड़ा रोऊँगा। मेरे मन में कड़वाहट भरी है अत: मैं अबबोलूँगा।

2मैं परमेश्वर से कहूँगा ‘मुझ पर दोष मत लगा।। मुझे बता दे, मैंने तेरा क्या बुरा किया? मेरे विरुद्ध तेरे पास क्या है?

3हे परमेश्वर, क्या तू मुझे चोट पहुँचा कर प्रसन्न होता है? ऐसा लगता है जैसे तुझे अपनी सृष्टि की चिंता नहीं है। और शायद तू दुष्टों के कुचक्रों का पक्ष लेताहै।

4हे परमेश्वर, क्या तेरी आँखें मनुष्य समान है? क्या तू वस्तुओं को ऐसे ही देखता है, जैसे मनुष्य की आँखे देखा करती हैं।

5तेरी आयु हम मनुष्यों जैसे छोटी नहीं है। तेरे वर्ष कम नहीं हैं जैसे मनुष्य के कम होतेहैं।

6तू मेरी गलतियों को ढूढ़ता है, और मेरे पापों को खोजता है।

7तू जानता है कि मै निरपराध हूँ। किन्तु मुझे कोई भी तेरी शक्ति से बचा नहींसकता।

8परमेश्वर, तूने मुझ को रचा और तेरे हाथों ने मेरी देह को सँवारा, किन्तु अब तू ही मुझ से विमुख हुआ और मुझे नष्ट कर रहा है।

9हे परमेश्वर, याद कर कि तूने मुझे मिट्टी से मढ़ा, किन्तु अब तू ही मुझे फिर से मिट्टी में मिलायेगा।

10तू दूध के समान मुझ को उडेंलता है, दूध की तरह तू मुझे उबालता है और तू मुझे दूध से पनीर में बदलता है।

11तूने मुझे हड्डियों और माँस पेशियों से बुना और फिर तूने मुझ पर माँस और त्वचा चढ़ा दी।

12तूने मुझे जीवन का दान दिया और मेरे प्रति दयालु रहा। तूने मेरा ध्यान रखा और तूने मेरे प्राणों की रखवाली की।

13किन्तु यह वह है जिसे तूने अपने मन में छिपाये रखा और मैं जानता हूँ, यह वह है जिसकी तूने अपने मन में गुप्त रूप से योजना बनाई। हाँ, यह मैं जानता हूँ, यह वह है जो तेरे मन में था।

14यदि मैंने पाप किया तो तू मुझे देखता था। सो मेरे बुरे काम का दण्ड तू दे सकता था।

15जब मैं पाप करता हूँ तो मैं अपराधी होता हूँ और यह मेरे लिये बहुत ही बुरा होगा। किन्तु मैं यदि निरपराध भी हूँ तो भी अपना सिर नहीं उठा पाता क्योंकि मैं लज्जा और पीड़ा से भरा हुआ हूँ।

16यदि मुझ को कोई सफलता मिल जाये और मैं अभिमानी हो जाऊँ, तो तू मेरा पीछा वैसे करेगा जैसे सिंह के पीछे कोई शिकारी पड़ता है। और फिर तू मेरे विरुद्ध अपनी शक्ति दिखायेगा।

17तू मेरे विरुद्ध सदैव किसी न किसी को नया साक्षी बनाता है। तेरा क्रोध मेरे विरुद्ध और अधिक भड़केगा तथा मेरे विरुद्ध तू नई नई शत्रु सेना लायेगा।

18सो हे परमेश्वर, तूने मुझको क्यों जन्म दिया? इससे पहले की कोई मुझे देखता काश! मैं मर गया होता।

19काश! मैं जीवित न रहता। काश! माता के गर्भ से सीधे ही कब्र में उतारा जाता।

20मेरा जीवन लगभग समाप्त हो चुका है सो मुझे अकेला छोड़ दो। मेरा थोड़ा सा समय जो बचा है उसे मुझे चैन से जी लेने दो।

21इससे पहले कि मैं वहाँ चला जाऊँ जहाँ से कभी कोई वापस नहीं आता हैं। जहाँ अंधकार है और मृत्यु का स्थान है। 22जो थोड़ा समय मेरा बचा है उसे मुझ को जी लेने दो, इससे पहले कि मैं वहाँ चला जाऊँ जिस स्थान को कोई नहीं देख पाता अर्थात् अंधकार, विप्लव, और गड़बड़ी का स्थान। उस स्थान में यहाँ तक कि प्रकाश भी अंधकारपूर्ण होता है।'"

सोपर का अय्यूब से कथन

11 इस पर नामात नामक प्रदेश के सोपर ने अय्यूब को उत्तर देते हुये कहा,

2"इस शब्दों के प्रवाह का उत्तर देना चाहिये। क्या यह सब कहना अय्यूब को निर्दोष ठहराता है? नहीं!

3अय्यूब, क्या तुम सोचते हो कि हमारे पास तुम्हारे लिये उत्तर नहीं है? क्या तुम सोचते हो कि जब तुम परमेश्वर पर हंसते हो तो कोई तुम्हें चेतावनी नहीं देगा।

4अय्यूब, तुम परमेश्वर से कहते रहे कि, 'मेरा विश्वास सत्य है और तू देख सकता है कि मैं निष्कलंक हूँ!'

5अय्यूब, मेरी ये इच्छा है कि परमेश्वर तुझे उत्तर दे, यह बताते हुए कि तू दोषपूर्ण है!

6काश! परमेश्वर तुझे बुद्धि के छिपे रहस्य बताता और वह सचमुच तुझे उनको बतायेगा! हर कहानी के दो पक्ष होते हैं, अय्यूब, मेरी सुन परमेश्वर तुझे कम दण्डित कर रहा है, अपेक्षाकृत जितना उसे सचमुच तुझे दण्डित करना चाहिये।

7अय्यूब, क्या तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रहस्यपूर्ण सत्य समझ सकते हो? क्या तुम उसके विवेक की सीमा मर्यादा समझ सकते हो?

8उसकी सीमायें आकाश से ऊँची हैं, इसलिये तुम नहीं समझ सकते हो! सीमायें नर्क की गहराईयों से गहरी है, सो तू उनको समझ नहीं सकता है!

9वे सीमायें धरती से व्यापक हैं, और सागर से विस्तृत हैं।

10यदि परमेश्वर तुझे बंदी बनाये और तुझको न्यायालय में ले जाये, तो कोई भी व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता है।

11परमेश्वर सचमुच जानता है कि कौन पाखण्डी है। परमेश्वर जब बुराई को देखता है, तो उसे याद रखता है।

12किन्तु कोई मूढ जन कभी बुद्धिमान नहीं होगा, जैसे बनैला गधा कभी मनुष्य को जन्म नहीं दे सकता है।

13सो अय्यूब, तुझको अपना मन तैयार करना चाहिये, परमेश्वर की सेवा करने के लिये। तुझे अपने निज हाथों को प्रार्थना करने को ऊपर उठाना चाहिये।

14वह पाप जो तेरे हाथों में बसा है, उसको तू दूर कर। अपने तम्बू में बुराई को मत रहने दे।

15तभी तू निश्चय ही बिना किसी लज्जा के आँख ऊपर उठा कर परमेश्वर को देख सकताहै। तू दृढता से खड़ा रहेगा और नहीं डरेगा।

16अय्यूब, तब तू अपनी विपदा को भूल पायेगा। तू अपने दुखड़ो को बस उस पानी सा याद करेगा जो तेरे पास से बह कर चला गया।

17तेरा जीवन दोपहर के सूरज से भी अधिक उज्जवल होगा। जीवन की अँधेरी घड़ियाँ ऐसे चमकेगी जैसे सुबह का सूरज।

18अय्यूब, तू सुरक्षित अनुभव करेगा क्योंकि वहाँ आशा होगी। परमेश्वर तेरी रखवाली करेगा और तुझे आराम देगा।

19चैन से तू सोयेगा, कोई तुझे नहीं डरायेगा और बहुत से लोग तुझ से सहायता माँगेंगे!

20किन्तु जब बुरे लोग आसरा ढूढेंगे तब उनको नहीं मिलेगा। उनके पास कोई आस नहीं होगी। वे अपनी विपत्तियों से बच कर निकल नहीं पायेंगे। मृत्यु ही उनकी आशा मात्र होगी।"

सोपर को अय्यूब का उत्तर

12 फिर अय्यूब ने सोपर को उत्तर दिया:
2"नि:सन्देह तुम सोचते हो कि मात्र तुम ही लोग बुद्धिमान हो, तुम सोचते हो कि जब तुम मरोगे तो विवेक मर जायेगा तुम्हारे साथ।

3किन्तु तुम्हारे जितनी मेरी बुद्धि भी उत्तम है, मैं तुम से कुछ घट कर नहीं हूँ। ऐसी बातों को जैसी तुम कहते हो, हर कोई जानता है।

4अब मेरे मित्र मेरी हँसी उड़ाते हैं, वह कहते है: 'हाँ, वह परमेश्वर से विनती किया करता था, और वह उसे उत्तर देता था। इसलिए यह सब बुरी बातें उसके साथ घटित हो रही है।' यद्यपि मैं दोषरहित और खरा हूँ, लेकिन वे मेरी हँसी उड़ाते हैं।

5ऐसे लोग जिन पर विपदा नहीं पड़ी, विपदा ग्रस्तलोगों की हँसी किया करते हैं। ऐसे लोग गिरते हुये व्यक्ति को धक्का दिया करते हैं।

6डाकुओं के डेरे निश्चिंत रहते हैं, ऐसे लोग जो परमेश्वर को रुष्ट करते हैं, शांति से रहते हैं। स्वयं अपने बल को वह अपना परमेश्वर मानते हैं।

7चाहे तू पशु से पूछ कर देख, वे तुझे सिखादेंगे, अथवा हवा के पक्षियों से पूछ वे तुझे बता देंगे।

8अथवा तू धरती से पूछ ले वह तुझको सिखा देगी या सागर की मछलियों को अपना ज्ञान तुझे बताने दे।

9हर कोई जानता है कि परमेश्वर ने इन सब वस्तुओं को रचा है।

10हर जीवित पशु और हर एक प्राणी जो साँस लेता है, परमेश्वर की शक्ति के आधीन है।

11जैसे जीभ भोजन का स्वाद चखती है, वैसी ही कानों को शब्दों को परखना भाताहै।

12हम कहते है, "ऐसे ही बुढ़ों के पास विवेक रहता है, और लम्बी आयु समझ बूझ देतीहै।"

13विवेक और सामर्थ्य परमेश्वर के साथ रहतेहै, सम्मत्ति और सूझ-बूझ उसी की ही होती है।

14यदि परमेश्वर किसी वस्तु को ढा गिराये तो, फिर लोग उसे नहीं बना सकते। यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति को बन्दी बनाये, तो लोग उसे मुक्त नहीं कर सकते।

15यदि परमेश्वर वर्षा को रोके तो धरती सूख जायेगी।यदि परमेश्वर वर्षा को छूट दे दे, तो वह धरती पर बाढ़ ले आयेगी।

16परमेश्वर समर्थ है और वह सदा विजयी होता है। वह व्यक्ति जो छलता है और वह व्यक्ति जो छला जाता है दोनो परमेश्वर के हैं।

17परमेश्वर मन्त्रियों को बुद्धि से वंचित कर देताहै, और वह प्रमुखों को ऐसा बना देता है कि वे मूर्ख जनों जैसा व्यवहार करने लगते हैं।

18राजा बन्दियों पर जंजीर डालते हैं किन्तु उन्हें परमेश्वर खोल देता है। फिर परमेश्वर उन राजाओं पर एक कमरबन्द बांध देता है।

19परमेश्वर याजको को बन्दी बना कर, पद से हटाता है और, तुच्छ बना कर ले जाता है। वह बलि और शक्तिशाली लोगों को शक्तिहीन कर देता है।

20परमेश्वर विश्वासपात्र सलाह देनेवाले को चुप करा देता है। वह वृद्ध लोगों का विवेक छीन लेता है।

21परमेश्वर महत्वर्पूण हाकिमों पर घृणा उंडेल देता है। वह शासकों की शक्ति छीन लिया करता है।

22परमेश्वर गहन अंधकार से रहस्यपूर्ण सत्य को प्रगट करता है। ऐसे स्थानों में जहाँ मृत्यु सा अंधेरा है वह प्रकाश भेजता है।

23परमेश्वर राष्ट्रों को विशाल और शक्तिशाली होने देता है, और फिर उनको वह नष्ट कर डालता है। वह राष्ट्रों को विकसित कर विशाल बनने देता है, फिर उनके लोगों को वह तितर-बितर कर देता है

24परमेश्वर धरती के प्रमुखों को मूर्ख बना देताहै, और उन्हें नासमझ बना देता है। वह उनको मरुभूमि में जहाँ कोई राह नहीं भटकने को भेज देता है।

25वे प्रमुख अंधकार के बीच टटोलते हैं, कोई भी प्रकाश उनके पास नहीं होता है। परमेश्वर उनको ऐसे चलाता है, जैसे पी कर धुत्त हुये लोग चलते हैं।'

13 अय्यूब ने कहा: "मेरी आँखों ने यह सब पहले देखा है और पहले ही मैं सुन चुका हूँ जो कुछ
तुम कहा करते हो। इस सब की समझ बूझ मुझे है।2मैं
भी उतना ही जानता हूँ जितना तू जानता है, मैं तुझ से
कम नहीं हूँ। 3किन्तु मुझे इच्छा नहीं है कि मैं तुझ से
तर्क करूँ, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर से बोलना चाहता
हूँ। अपने संकट के बारे में, मैं परमेश्वर से तर्क करना
चाहता हूँ। 4किन्तु तुम तीनो लोग अपने अज्ञान को
मिथ्या विचारों से ढकना चाहते हो। तुम वो बेकार के
चिकित्सक हो जो किसी को अच्छा नहीं कर सकता।
5मेरी यह कामना है कि तुम पूरी तरह चुप हो जाओ,
यह तुम्हारे लिये बुद्धिमत्ता की बात होगी जिसको तुम
कर सकते हो!

6"अब, मेरी युक्ति सुनो! सुनो जब मैं अपनी सफाई दूँ।

7क्या तुम परमेश्वर के हेतु झूठ बोलोगे? क्या यह तुमको सचमुच विश्वास है कि ये तुम्हारे झूठ परमेश्वर तुम से बुलवाना चाहता है?

8क्या तुम मेरे विरुद्ध परमेश्वर का पक्ष लोगे? क्या तुम न्यायालय में परमेश्वर को बचाने जा रहे हो?

9यदि परमेश्वर ने तुमको अति निकटता से जाँच लिया तो क्या वह कुछ भी अच्छी बातपायेगा? क्या तुम

सोचते हो कि तुम परमेश्वर को छल पाओगे, ठीक उसी तरह जैसे तुम लोगों को छलते हो?

10यदि तुम न्यायालय में छिपे छिपे किसी का पक्ष लोगे तो परमेश्वर निश्चय ही तुम को लताड़ेगा।

11उसका भव्य तेज तुमको डरायेगा और तुम भयभीत हो जाओगे।

12तुम सोचते हो कि तुम चतुराई भरी और बुद्धिमत्तापूर्ण बातें करते हो, किन्तु तम्हारे कथन राख जैसे व्यर्थ हैं। तुम्हारी युक्तियाँ माटी सी दुर्बल हैं।

13चुप रहो और मुझको कह लेने दो। फिर जो भी होना है मेरे साथ हो जाने दो।

14मैं स्वयं को संकट में डाल रहा हूँ और मैं स्वयं अपना जीवन अपने हाथों में ले रहा हूँ।

15चाहे परमेश्वर मुझे मार दे। मुझे कुछ आशा नहीं है, तो भी मैं अपना मुकदमा उसके सामने लड़ूँगा।

16किन्तु सम्भव है कि परमेश्वर मुझे बचा ले, क्योंकि मैं उसके सामने निडर हूँ। कोई भी बुरा व्यक्ति परमेश्वर से आमने सामने मिलने का साहस नहीं कर सकता।

17उसे ध्यान से सुन जिसे मैं कहता हूँ, उस पर कान दे जिसकी व्याख्या मैं करता हूँ।

18अब मैं अपना बचाव करने को तैयार हूँ। यह मुझे पता है कि मुझ को निर्दोष सिद्ध किया जायेगा।

19कोई भी व्यक्ति यह प्रमाणित नहीं कर सकता कि मैं गलत हूँ। यदि कोई व्यक्ति यह सिद्ध कर दे तो मैं चुप हो जाऊँगा और प्राण दे दूँगा।

20हे परमेश्वर, तू मुझे दो बाते दे दे, फिर मैं तुझ से नहीं छिपूँगा।

21मुझे दण्ड देना और डराना छोड़ दे, अपने आतंको से मुझे छोड़ दे।

22फिर तू मुझे पुकार और मै तुझे उत्तर दूँगा, अथवा मुझको बोलने दे और तू मुझको उत्तरदे।

23कितने पाप मैंने किये हैं? कौन सा अपराध मुझसे बन पड़ा? मुझे मेरे पाप और अपराध दिखा।

24हे परमेश्वर, तू मुझसे क्यों बचता है और मेरे साथ शत्रु जैसा व्यवहार क्यों करता है?

25क्या तू मुझको डरायेगा? मैं (अय्यूब) एक पत्ता हूँ जिसको पवन उड़ाती है। एक सूखे तिनके पर तू प्रहार कर रहा है।

26हे परमेश्वर, तू मेरे विरोध में कड़वी बात बोलता है। तू मुझे ऐसे पापों के लिये दु:ख देता है जो मैंने लड़कपन में किये थे।

27मेरे पैरों में तूने काठ डाल दिया है, तू मेरे हर कदम पर आँख गड़ाये रखता है। मेरे कदमों की तूने सीमायें बाँध दी हैं।

28मैं सड़ी वस्तु सा क्षीण होता जाता हूँ कीड़ें से खाये हुये कपड़े के टुकड़े जैसा।"

14 अय्यूब ने कहा, "हम सभी मानव हैं हमारा जीवन छोटा और दु:खमय है!

2मनुष्य का जीवन एक फूल के समान है जो शीघ्र उगता है और फिर समाप्त हो जाता है। मनुष्य का जीवन है जैसे कोई छाया जो थोड़ी देर टिकती है और बनी नहीं रहती।

3हे परमेश्वर,क्या तू मेरे जैसे मनुष्यपरध्यानदेगा? क्या तू मेरा न्याय करने मुझे सामने लायेगा?

4किसी ऐसी वस्तु से जो स्वयं अस्वच्छ है स्वच्छ वस्तु कौन पा सकता है? कोई नही।

5मनुष्य का जीवन सीमित है। मनुष्य के महीनों की संख्या परमेश्वर ने निश्चित कर दी है। तूने मनुष्य के लिये जो सीमा बांधी है, उसे कोई भी नहीं बदल सकता।

6सो परमेश्वर, तू हम पर आँख रखना छोड़ दे। हम लोगों को अकेला छोड़ दे। हमें अपने कठिन जीवन का मजा लेने दे, जब तक हमारा समय नहीं समाप्त हो जाता।

7किन्तु यदि वृक्ष को काट गिराया जाये तो भी आशा उसे रहती हैं कि वह फिर से पनप सकता है, क्योंकि उसमें नई नई शाखाऐं निकलती रहेंगी।

8चाहे उस की जड़े धरती में पुरानी क्यों न हो जायें और उसका तना चाहे मिट्‌टी में गल जाये।

9किन्तु जल की गंध मात्र से ही वह नई बढ़त देता है और एक पौधे की तरह उससे शाखाऐं फूटती हैं।

10किन्तु जब बलशाली मनुष्य मर जाता है उसकी सारी शक्ति खत्म हो जाती है। जब मनुष्य मरता है वह चला जाता है।

11जैसे सागर के तट से जल शीघ्र लौट कर खो जाता है और जल नदी का उतरता है, और नदी सूख जाती है।

12उसी तरह जब कोई व्यक्ति मर जाता है वह नीचे लेट जाता है और वह महा निद्रा से फिर खड़ा नहीं होता। वैसे ही वह व्यक्ति जो प्राण त्यागता है कभी खड़ा नहीं होता अथवा चिर निद्रा नहीं त्यागता जब तक आकाश विलुप्त नहीं होंगे।

13काश! तू मुझे मेरी कब्र में मुझे छुपा लेता जब तक तेरा क्रोध न बीत जाता। फिर कोई समय मेरे लिये नियुक्त करके तू मुझे याद करता।

14यदि कोई मनुष्य मर जाये तो क्या जीवन कभी पायेगा? मैं तब तक बाट जोहूँगा, जब तक मेरा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता और जब तक मैं मुक्त न हो जाऊँ।

15हे परमेश्वर, तू मुझे बुलायेगा और मैं तुझे उत्तर दूँगा। तूने मुझे रचा है, सो तू मुझे चाहेगा।

16फिर तू मेरे हर चरण का जिसे मैं उठाता हूँ, ध्यान रखेगा और फिर तू मेरे उन पापों पर आँख रखेगा, जिसे मैंने किये हैं।

17काश! मेरे पाप दूर हो जाएँ। किसी थैले में उन्हें बन्द कर दिया जाये और फिर तू मेरे पापों को ढक दे।

18जैसे पर्वत गिरा करता है और नष्ट हो जाता है और कोई चट्टान अपना स्थान छोड़ देती है।

19जल पत्थरों के ऊपर से बहता है और उन को घिस डालता है तथा धरती की मिट्टी को जल बहाकर ले जाती है। हे परमेश्वर, उसी तरह व्यक्ति की आशा को तू बहा ले जाता है।

20तू एक बार व्यक्ति को हराता है और वह समाप्त हो जाता है। तू मृत्यु के रूप सा उस का मुख बिगाड़ देता है, और सदा सदा के लिये कहीं भेज देता है।

21यदि उसके पुत्र कभी सम्मान पाते हैं तो उसे कभी उसका पता नहीं चल पाता। यदि उस के पुत्र कभी अपमान भोगतें हैं, जो वह उसे कभी देख नहीं पाता हैं।

22वह मनुष्य अपने शरीर में पीड़ा भोगता है और वह केवल अपने लिये ऊँचे पुकारता है।"

15 इस पर तेमान नगर के निवासी एलीपज ने अय्यूब को उत्तर देते हुए कहा:

2"अय्यूब, यदि तू सचमुच बुद्धिमान होता तो रोते शब्दों से तू उत्तर न देता। क्या तू सोचता है कि कोई विवेकी पुरुष पूर्व की लू की तरह उत्तर देता है?

3क्या तू सोचता है कि कोई बुद्धिमान पुरुष व्यर्थ के शब्दों से और उन भाषणों से तर्क करेगा जिनका कोई लाभ नहीं?

4अय्यूब, यदि तू मनमानी करता है तो कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की न तो आदर करेगा, न ही उससे प्रार्थना करेगा।

5तू जिन बातों को कहता है वह तेरा पाप साफ साफ दिखाती हैं। अय्यूब, तू चतुराई भरे शब्दों का प्रयोग करके अपने पाप को छिपाने का प्रयत्न कर रहाहै।

6तू उचित नहीं यह प्रमाणित करने की मुझे आवश्यकता नहीं है। क्योंकि तू स्वयं अपने मुख से जो बातें कहताहै, वह दिखाती हैं कि तू बुरा है और तेरे ओंठ स्वयं तेरे विरुद्ध बोलते हैं।

7अय्यूब, क्या तू सोचता है कि जन्म लेने वाला पहला व्यक्ति तू ही है और पहाड़ों कि रचना से भी पहले तेरा जन्म हुआ।

8क्या तूने परमेश्वर की रहस्यपूर्ण योजनाऐं सुनी थी? क्या तू सोचा करता है कि एक मात्र तू ही बुद्धिमान है?

9अय्यूब, तू हम से अधिक कुछ नहीं जानता है। वे सभी बातें हम समझते हैं, जिनकी तुझको समझ है।

10वे लोग जिनके बाल सफेद हैं और वृद्ध पुरुषहैं वे हमसे सहमत रहते हैं। हाँ, तेरे पिता से भी वृद्ध लोग हमारे पक्ष में हैं।

11परमेश्वर तुझको सुख देने का प्रयत्न करता है, किन्तु यह तेरे लिये पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर का सुसन्देश बड़ी नम्रता के साथ हमने तुझे सुनाया।

12अय्यूब, क्यों तेरा हृदय तुझे खींच ले जाता है? तू क्रोध में क्यों हम पर आँखें तरेरता है?

13जब तू इन क्रोध भरे वचनों को कहता है, तो तू परमेश्वर के विरुद्ध होता है।

14सचमुच कोई मनुष्य पवित्र नहीं हो सकता। मनुष्य स्त्री से पैदा हुआ है, और धरती पर रहता है, अत: वह उचित नहीं हो सकता।

15यहाँ तक कि परमेश्वर अपने दूतों तक का विश्वास नहीं करता है। यहाँ तक कि स्वर्ग जहाँ स्वर्गदूत रहते हैं पवित्र नहीं हैं।

16मनुष्य तो और अधिक पापी है। वह मनुष्य मलिन और घिनौना है वह बुराई को जल की तरह गटकता है।

17अय्यूब, मेरी बात तू सुन और मैं उसकी व्याख्या तुझसे करूँगा। मैं तुझे बताऊँगा, जो मैं जानता हूँ।

18मैं तुझको वे बातें बताऊँगा, जिन्हें विवेकी पुरुषों ने मुझ को बताया है और विवेकी पुरुषों को उनके पूर्वजों ने बताई थी। उन विवेकी पुरुषों ने कुछ भी मुझसे नहीं छिपाया।

19केवल उनके पूर्वजों को ही देश दिया गया था। उनके देश में कोई परदेशी नहीं था।

20दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा झेलेगा और क्रूर जन उन सभी वर्षों में जो उसके लिये निश्चित किये गये हैं, दुःख उठाता रहेगा।

21उसके कानों में भयंकर ध्वनियाँ होगी। जब वह सोचेगा कि वह सुरक्षित है तभी उसके शत्रु उस पर हमला करेंगे।

22दुष्ट जन बहुत अधिक निराश रहता है और उसके लिये कोई आशा नहीं है, कि वह अंधकार से बच निकल पाये। कहीं एक ऐसी तलवार है जो उसको मार डालने की प्रतिज्ञा कर रही है।

23वह इधर उधर भटकता हुआ फिरता है किन्तु उसकी देह गिद्धों का भोजन बनेगी। उसको यह पता है कि उसकी मृत्यु बहुत निकट है।

24चिंता और यातनाऐं उसे डरपोक बनाती है और ये बातें उस पर ऐसे वार करती हैं, जैसे कोई राजा उसके नष्ट कर डालने को तत्पर हो।

25क्यों? क्योंकि दुष्ट जन परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार करता है, वह परमेश्वर को घूसा दिखाता है और सर्वशक्तिमान परमेश्वर को पराजित करने का प्रयास करता है।

26वह दुष्ट जन बहुत हठी है। वह परमेश्वर पर एक मोटी मजबूत ढाल से वार करना चाहता है।

27दुष्ट जन के मुख पर चर्बी चढ़ी रहती है। उस की कमर माँस भर जाने से मोटी हो जातीहै।

28किन्तु वह उजड़े हुये नगरों में रहेगा। वह ऐसे घरों में रहेगा जहाँ कोई नहीं रहता है। जो घर कमजोर हैं और जो शीघ्र ही खण्डहर बन जायेंगे।

29दुष्ट जन अधिक समय तक धनी नहीं रहेगा उसकी
सम्पत्तियाँ नहीं बढ़ती रहेंगी।
30दुष्ट जन अन्धेरे से नहीं बच पायेगा। वह उस वृक्ष
सा होगा जिसकी शाखाऐं आग से झुलस गई हैं। परमेश्वर
की फूँक दुष्टों को उड़ा देगी।
31दुष्ट जन व्यर्थ वस्तुओं के भरोसे रह कर अपने
को मूर्ख न बनाये क्योंकि उसे कुछ नहीं प्राप्त होगा।
32दुष्ट जन अपनी आयु के पूरा होने से पहले ही
बुढ़ा हो जायेगा और सूख जायेगा। वह एक सूखी हुई
डाली सा हो जायेगा जो फिर कभी भी हरी नहीं होगी।
33दुष्ट जन उस अंगूर की बेल सा होता है जिस के
फल पकने से पहले ही झड़ जाते हैं। ऐसा व्यक्ति जैतून
के पेड़ सा होता है, जिसके फूल झड़ जाते हैं।
34क्यों? क्योंकि परमेश्वर विहीन लोग खाली हाथ
रहेंगे। ऐसे लोग जिनको पैसों से प्यार है, घूस लेते हैं।
उन के घर आग से नष्ट हो जायेंगे।
35वे पीड़ा का कुचक्र रचते हैं और बुरे काम करते
हैं। वे लोगों को छलने के ढंगों की योजना बनातेहैं।"

16 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:
2"मैंने पहले ही ये बातें सुनी हैं। तुम तीनों मुझे
दु:ख देते हो, चैन नहीं।
3तुम्हारी व्यर्थ की लम्बी बातें कभी समाप्त नहीं
होती। तुम क्यों तर्क करते ही रहते हो?
4जैसे तुम कहते हो वैसी बातें तो मैं भी कर सकता
हूँ, यदि तुम्हें मेरे दु:ख झेलने पड़ते। तुम्हारे विरोध में
बुद्धिमता की बातें मैं भी बना सकता हूँ और अपना
सिर तुम पर नचा सकता हूँ।
5किन्तु मैं अपने वचनों से तुम्हारा साहस बढ़ा सकता
हूँ और तुम्हारे लिये आशा बन्धा सकता हूँ।
6किन्तु जो कुछ मैं कहता हूँ उससे मेरा दु:ख दूर
नहीं हो सकता। किन्तु यदि मैं कुछ भी न कहूँ तो भी
मुझे चैन नहीं पड़ता।
7सचमुच हे परमेश्वर तूने मेरी शक्तिको हर लिया है।
तूने मेरे सारे घराने को नष्ट कर दिया है।
8तूने मुझे बांध दिया और हर कोई मुझे देख सकता
है। मेरी देह दुर्बल है, मैं भयानक दिखता हूँ और लोग
ऐसा सोचते हैं जिस का तात्पर्य है किमैं अपराधी हूँ।
9परमेश्वर मुझ पर प्रहार करता है। वह मुझ पर
कुपित है और वह मेरी देह को फाड़ कर अलग कर
देता है, तथा परमेश्वर मेरे ऊपर दाँत पीसता है। मुझे
शत्रु घृणा भरी दृष्टि से घूरते हैं। 10लोग मेरी हँसी करते
हैं। वे सभी भीड़ बना कर मुझे घेरने को और मेरे मुँह
पर थप्पड़ मारने को सहमत हैं।
11परमेश्वर ने मुझे दुष्ट लोगों के हाथ में अर्पित कर
दिया है। उसने मुझे पापी लोगों के द्वारा दु:ख दिया है।
12मेरे साथ सब कुछ भला चंगा था किन्तु तभी
परमेश्वर ने मुझे कुचल दिया। हाँ, उसने मुझे पकड़
लिया गर्दन से और मेरे चिथड़े चिथड़े कर डाले। परमेश्वर
ने मुझको निशाना बना लिया।
13परमेश्वर के तीरंदाज मेरे चारों तरफ हैं। वह मेरे
गुर्दों को बाणों से बेधता है। वह दया नहीं दिखाता है। वह
मेरे पित्त को धरती पर बिखेरता है।
14परमेश्वर मुझ पर बार बार वार करता है। वह मुझ
पर ऐसे झपटता है जैसे कोई सैनिक युद्ध में झपटता है।
15मैं बहुत ही दु:खी हूँ इसलिये मैं टाट के वस्त्र
पहनता हूँ। यहाँ मिट्टी और राख में मैं बैठा रहता हूँ
और सोचा करता हूँ कि मैं पराजित हूँ।
16मेरा मुख रोते–बिलखते लाल हुआ। मेरी आँखों के
नीचे काले घेरे हैं।
17मैंने किसी के साथ कभी भी क्रूरता नहीं की।
किन्तु ये बुरी बातें मेरे साथ घटित हुई। मेरी प्रार्थनाऐं
सही और सच्चे हैं।
18हे पृथ्वी, तू कभी उन अत्याचारों को मत छिपाना
जो मेरे साथ किये गये हैं। मेरी न्याय की विनती को तू
कभी रुकने मत देना।
19अब तक भी सम्भव है कि वहाँ आकाश में कोई
तो मेरे पक्ष में हो। कोई ऊपर है जो मुझे दोषरहित सिद्ध
करेगा।
20मेरे मित्र मेरे विरोधी हो गये हैं किन्तु परमेश्वर के
लिये मेरी आँखें आँसू बहाती हैं।
21मुझे कोई ऐसा व्यक्ति चाहिये जो परमेश्वर से मेरा
मुकदमा लड़े। एक ऐसा व्यक्ति जो ऐसे तर्क करे जैसे
निज मित्र के लिये करता हो।
22कुछ ही वर्ष बाद मैं वहाँ चला जाऊँगा जहाँ से फिर
मैं कभी वापस न आऊँगा (मृत्यु)।

17 "मेरा मन टूट चुका है। मेरा मन निराश है।
मेरा प्राण लगभग जा चुका है। कब्र मेरी बाट
जोह रही है।
2लोग मुझे घेरते हैं और मुझ पर हँसते हैं। जब लोग
मुझे सताते हैं और मेरा अपमान करते हैं, मैं उन्हें
देखता हूँ।
3"परमेश्वर, मेरे निरपराध होने का शपथ–पत्र मेरा
स्वीकार कर। मेरी निर्दोषता की साक्षी देने के लिये
कोई तैयार नहीं होगा।
4मेरे मित्रों का मन तूने मूँदा अत: वे मुझे कुछ नहीं
समझते हैं। कृपा कर उन को मत जीतने दे।
5लोगों की कहावत को तू जानता है। मनुष्य जो
ईनाम पाने को मित्र के विषय में गलत सूचना देते हैं,
उन के बच्चे अन्धे हो जाया करते हैं।
6परमेश्वर ने मेरा नाम हर किसी के लिये अपशब्द
बनाया है और लोग मेरे मुँह पर थूका करते हैं।
7मेरी आँख लगभग अन्धी हो चुकी है क्योंकि मैं
बहुत दु:खी और बहुत पीड़ा में हूँ। मेरी देह एक छाया
की भाँति दुर्बल हो चुकी है।

8मेरी इस दुर्दशा से सज्जन बहुत व्याकुल हैं। निरपराधी लोग भी उन लोगों से परेशान हैं जिनको परमेश्वर की चिन्ता नहीं हैं।

9किन्तु सज्जन नेकी का जीवन जीते रहेंगे। निरपराधी लोग शक्तिशाली हो जायेंगे।

10किन्तु तुम सभी आओ और फिर मुझ को दिखाने का यत्न करो कि सब दोष मेरा है। तम में से कोई भी विवेकी नहीं।

11मेरा जीवन यूँ ही बीत रहा है। मेरी योजनाऐं टूटगई हैं और आशा चली गई है।

12किन्तु मेरे मित्र रात को दिन सोचा करते हैं। जब अन्धेरा होता है, वे लोग कहा करते हैं ‘प्रकाश पास ही है।’

13यदि मैं आशा करुँ कि अन्धकारपूर्ण कब्र मेरा घर और बिस्तर होगा।

14यदि मैं कब्र से कहूँ ‘तू मेरा पिता है’ और कीड़े से ‘तू मेरी माता है अथवा तू मेरी बहन है।’

15किन्तु यदि वह मेरी एकमात्र आशा है तब तो कोई आशा मुझे नहीं हैं और कोई भी व्यक्ति मेरे लिये कोई आशा नहीं देख सकता है।

16क्या मेरी आशा भी मेरे साथ मृत्यु के द्वार तक जायेगी? क्या मैं और मेरी आशा एक साथ धूल में मिलेंगे?”

अय्यूब को बिल्दद का उत्तर

18 फिर शूही प्रदेश के बिल्दद ने उत्तर देते हुए
कहा: 2“अय्यूब, इस तरह की बातें करना तू
कबछोड़ेगा? तुझे चुप होना चाहिये और फिर सुनना चाहिये। तब हम बातें कर सकते हैं।

3तू क्यों यह सोचता हैं कि हम उतने मूर्ख हैं जितनी मूर्ख गायें।

4अय्यूब, तू अपने क्रोध से अपनी ही हानि कर रहा है। क्या लोग धरती बस तेरे लिये छोड़ दे? क्या तू यह सोचता है कि बस तुझे तृप्त करने को परमेश्वर धरती को हिला देगा?

5हाँ, बुरे जन का प्रकाश बुझेगा और उसकी आग जलना छोड़ेगी।

6उस के तम्बू का प्रकाश काला पड़ जायेगाऔर जो दीपक उसके पास है वह बुझ जायेगा।

7उस मनुष्य के कदम फिर कभी मजबूत और तेज नहीं होंगे। किन्तु वह धीरे चलेगा और दुर्बल हो जायेगा। अपने ही कुचक्रों से उसका पतन होगा।

8उसके अपने ही कदम उसे एक जाल के फन्दे में गिरा देंगे। वह चल कर जाल में जायेगा और फंस जायेगा।

9कोई जाल उसकी एड़ी को पकड़ लेगा। एक जाल उस को कसकर जकड़ लेगा।

10एक रस्सा उसके लिये धरती में छिपा होगा। कोई जाल राह में उसकी प्रतिक्षा में है।

11उसके तरफ आतंक उसकी टोह में हैं। उसके हर कदम का भय पीछा करता रहेगा।

12भयानक विपत्तियाँ उसके लिये भूखी हैं। जब वह गिरेगा, विनाश और विध्वंस उस के लिये तत्पर रहेंगे।

13महाव्याधिउसके चर्म के भागों को निगलजायेगी। वह उसकी बाहों और उसकी टाँगों को सड़ादेगी।

14अपने घर की सुरक्षा से दुर्जन को दूर किया जायेगा और आतंक के राजा से मिलाने के लिये उसको चलाकर ले जाया जायेगा।

15उसके घर में कुछ भी न बचेगा क्योंकि उसके समूचे घर में धधकती हुई गन्धक बिखेरी जायेगी।

16नीचे गई जड़ें उसकी सूख जायेंगी और उसके ऊपर की शाखाएं मुरझा जायेंगी।

17धरती के लोग उसको याद नहीं करेंगे। बस अब कोई भी उसको याद नहीं करेगा।

18प्रकाश से उसको हटा दिया जायेगा और वह अंधकार में ढकेला जायेगा। वे उसको दुनियां से दूर भगा देंगे।

19उसकी कोई सन्तान नहीं होगी अथवा उसके लोगों के कोई वंशज नहीं होंगे। उसके घर में कोई भी जीवित नहीं बचेगा।

20पश्चिम के लोग सहमें रह जायेंगे जब वे सुनेंगे कि
उस दुर्जन के साथ क्या घटी। लोग पूर्व के आतंकित हो
सुन्न रह जायेंगे। 21सचमुच दुर्जन के घर के साथ ऐसा
ही घटेगा। ऐसा ही घटेगा उस व्यक्ति क साथ जो परमेश्वर की परवाह नहीं करते।”

अय्यूब का उत्तर

19 तब अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:
2“कब तक तुम मुझे सताते रहोगे और शब्दों से
मुझको तोड़ते रहोगे?

3अब देखों, तुमने दसियों बार मुझे अपमानित किया है। मुझ पर वार करते तुम्हें शर्म नहीं आती है।

4यदि मैंने पाप किया तो यह मेरी समस्या है। यह तुम्हें हानि नहीं पहुँचाता।

5तुम बस यह चाहते हो कि तुम मुझसे उत्तमदिखो। तुम कहते हो कि मेरे कष्ट मुझ को दोषी प्रमाणित करते हैं।

6किन्तु वह तो परमेश्वर है जिसने मेरे साथ बुरा किया है और जिसने मेरे चारों तरफअपना फंदा फैलाया है।

7मैं पुकारा करता हूँ ‘मेरे संग बुरा किया है।’ लेकिन मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता है। चाहे मैं न्याय की पुकार पुकारा करुँ मेरी कोई नहीं सुनता है।

8मेरा मार्ग परमेश्वर ने रोका है, इसलिये उसको मैं पार नहीं कर सकता। उसने अंधकार में मेरा मार्ग छुपा दिया है।

9मेरा सम्मान परमेश्वर ने छीना है। उसने मेरे सिर से मुकुट छीन लिया है।

10जब तक मेरा प्राण नहीं निकल जाता, परमेश्वर मुझ को करवट दर करवट पटकियाँ देता है। वह मेरी आशा को ऐसे उखाड़ता है जैसे कोई जड़ से वृक्ष को उखाड़ दे।

11मेरे विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़क रहा है। वह मुझे अपना शत्रु कहता है।

12परमेश्वर अपनी सेना मुझ पर प्रहार करने को भेजता है। वे मेरे चारों और बुर्जियाँ बनाते हैं। मेरे तम्बू के चारों ओर वे आक्रमण करने के लिये छावनी बनाते हैं।

13मेरे बन्धुओं को परमेश्वर ने बैरी बनाया। अपने मित्रों के लिये मैं पराया हो गया।

14मेरे सम्बन्धियों ने मुझको त्याग दिया। मेरे मित्रों ने मुझको भुला दिया।

15मेरे घर के अतिथि और मेरी दासियाँ मुझे ऐसे दिखते हैं मानों मैं अन्जाना या परदेशी हूँ।

16मैं अपने दास को बुलाता हूँ पर वह मेरी नहीं सुनता है। यहाँ तक कि यदि मैं सहायता माँगू तो मेरा दास मुझको उत्तर नहीं देता।

17मेरी ही पत्नी मेरे श्वास की गंध से घृणा करतीहै। मेरे अपनी ही भाई मुझ से घृणा करते हैं।

18छोटे बच्चे तक मेरी हँसी उड़ाते है। जब मैं उनके पास जाता हूँ तो वे मेरे विरुद्ध बातें करते हैं।

19मेरे अपने मित्र मुझ से घृणा करते हैं। यहाँ तक कि ऐसे लोग जो मेरे प्रिय हैं, मेरे विरोधी बन गये हैं।

20मैं इतना दुर्बल हूँ कि मेरी खाल मेरी हड्डियों पर लटक गई। अब मुझ में कुछ भी प्राण नहीं बचा है।

21हे मेरे मित्रों मुझ पर दया करो, दया करो मुझ पर क्योंकि परमेश्वर का हाथ मुझ को छू गया है।

22क्यों मुझे तुम भी सताते हो जैसे मुझको परमेश्वर ने सताया है? क्यों मुझ को तुम दु:ख देते और कभी तृप्त नहीं होते हो?

23मेरी यह कामना है, कि जो मैं कहता हूँ उसे कोई याद रखे और किसी पुस्तक में लिखे। मेरी यह कामना है, कि काश! मेरे शब्द किसी गोल पत्रक पर लिखी जाती।

24मेरी यह कामना है काश! मैं जिन बातों को कहता उन्हें किसी लोहे की टाँकी से सीसे पर लिखा जाता, अथवा उनको चट्टान पर खोद दिया जाता, ताकि वे सदा के लिय अमर हो जाती।

25मुझको यह पता है कि कोई एक ऐसा है, जो मुझको बचाता है। मैं जानता हूँ अंत में वह धरती पर खड़ा होगा और मुझे बचायेगा।

26यहाँ तक कि मेरी चमड़ी नष्ट हो जाये, किन्तु काश, मैं अपने जीते जी परमेश्वर को देख सकूँ।

27अपने लिये मैं परमेश्वर को स्वयं देखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि स्वयं उसको अपनी आँखों से देखूँ न कि किसी दूसरे की आँखों से। मेरा मन मुझ में ही उतावला हो रहा है।

28सम्भव है तुम कहो, ‘हम अय्यूब को तंग करेंगे। उस पर दोष मढ़ने का हम को कोई कारण मिल जायेगा।’

29किन्तु तुम्हें स्वयं तलवार से डरना चाहिये क्योंकि पापी के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध दण्ड लायेगा। तुम्हें दण्ड देने को परमेश्वर तलवार काम में लायेगा तभी तुम समझोगे कि वहाँ न्याय का एक समय है।”

20 इस पर नामात प्रदेश के सोपर ने उत्तर दिया:
2“अय्यूब, तेरे विचार विकल हैं, सो मैं तुझे निश्चय ही उत्तर दूँगा। मुझे निश्चय ही जल्दी करनी चाहिये तुझको बताने को कि मैं क्या सोच रहा हूँ।

3तेरे सुधार भरे उत्तर हमारा अपमान करते हैं। किन्तु मैं विवेकी हूँ और जानता हूँ कि तुझे कैसे उत्तर दिया जाना चाहिये।

4-5इसे तू तब से जानता है जब बहुत पहले आदम को धरती पर भेजा गया था, दुष्ट जन का आनन्द बहुत दिनों नहीं टिकता हैं। ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर की चिन्ता नहीं है वह थोड़े समय के लिये आनन्दित होता है।

6चाहे दुष्ट व्यक्ति का अभिमान नभ छू जाये, और उसका सिर बादलों को छू जाये,

7किन्तु वह सदा के लिये नष्ट हो जायेगा जैसे स्वयं उसका देहमल नष्ट होगा। वे लोग जो उसको जानते हैं कहेंगे, ‘वह कहाँ है?’

8वह ऐसे विलुप्त होगा जैसे स्वप्न शीघ्र ही कहीं उड़ जाता है। फिर कभी कोई उसको देख नहीं सकेगा, वह नष्ट हो जायेगा, उसे रात के स्वप्न की तरह हाँक दिया जायेगा।

9वे व्यक्ति जिन्होंने उसे देखा था फिर कभी नहीं देखेंगे। उसका परिवार फिर कभी उसको नहीं देख पायेगा।

10जो कुछ भी उसने (दुष्ट) गरीबों से लिया था उसकी संताने चुकायेंगी। उनको अपने ही हाथों से अपना धन लौटाना होगा।

11जब वह जवान था, उसकी काया मजबूत थी, किन्तु वह शीघ्र ही मिट्टी हो जायेगी।

12दुष्ट के मुख को दुष्टता बड़ी मीठी लगती है, वह उसको अपनी जीभ के नीचे छुपा लेगा।

13बुरा व्यक्ति उस बुराई को थामे हुये रहेगा, उसका दूर हो जाना उसको कभी नहीं भायेगा, सो वह उसे अपने मुँह में ही थामे रहेगा।

14किन्तु उसके पेट में उसका भोजन जहर बन जायेगा, वह उसके भीतर ऐसे बन जायेगा जैसे किसी नाग के विष सा कड़वा जहर।

15दुष्ट सम्पत्तियों को निगल जाता है किन्तु वह उन्हें बाहर ही उगलेगा। परमेश्वर दुष्ट के पेट से उनको उगलवायेगा।

16दुष्ट जन साँपों के विष को चूस लेगा किन्तु साँपों के विषैले दाँत उसे मार डालेंगे।

17फिर दुष्ट जन देखने का आनन्द नहीं लेंगे ऐसी उन नदियों का जो शहद और मलाई लिये बहा करती हैं।

18दुष्ट को उसका लाभ वापस करने को दबाया जायेगा। उसको उन वस्तुओं का आनन्द नहीं लेने दिया जायेगा जिनके लिये उसने परिश्रम किया है।

19क्योंकि उस दुष्ट जन ने दीन जन से उचित व्यवहार नहीं किया। उसने उनकी परवाह नहीं की और उसने उनकी वस्तुऐं छीन ली थी, जो घर किसी और ने बनाये थे उसने वे हथियाये थे।

20दुष्ट जन कभी भी तृप्त नहीं होता है, उसका धन उसको नहीं बचा सकता है।

21जब वह खाता है तो कुछ नहीं छोड़ता है, सो उसकी सफलता बनी नहीं रहेगी।

22जब दुष्ट जन के पास भरपूर होगा तभी दुःखों का पहाड़ उस पर टूटेगा।

23दुष्ट जन वह सब कुछ खा चुकेगा जिसे वह खाना चाहता है। परमेश्वर अपना धधकता क्रोध उस पर डालेगा। उस दुष्ट व्यक्ति पर परमेश्वर दण्ड बरसायेगा।

24सम्भव है कि वह दुष्ट लोहे की तलवार से बच निकले, किन्तु कहीं से काँसे का बाण उसको मार गिरायेगा।

25वह काँसे का बाण उसके शरीर के आर पार होगा और उसकी पीठ भेद कर निकल जायेगा। उस बाण की चमचमाती हुई नोंक उसके जिगर को भेद जायेगी और वह भय से आतंकित हो जायेगा।

26उसके सब खजाने नष्ट हो जायेंगे, एक ऐसी आग जिसे किसी ने नहीं जलाया उसको नष्ट करेगी, वह आग उनको जो उसके घर में बचे हैं नष्ट कर डालेगी।

27स्वर्ग प्रमाणित करेगा कि वह दुष्ट अपराधी है, यह गवाही धरती उसके विरुद्ध देगी।

28जो कुछ भी उसके घर में है, वह परमेश्वर के क्रोध की बाढ़ में बह जायेगा।

29यह वही है जिसे परमेश्वर दुष्टों के साथ करने की योजना रचता है। यह वही है जैसा परमेश्वर उन्हें देने की योजना रचता है।"

अय्यूब का उत्तर

21 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:

2"तू कान दे उस पर जो मैं कहता हूँ, तेरे सुनने को तू चैन बनने दे जो तू मुझे देता है।

3जब मैं बोलता हूँ तो तू धीरज रख, फिर जब मैं बोल चुकूँ तब तू मेरी हँसी उड़ा सकता है।

4मेरी शिकायत लोगों के विरुद्ध नहीं हैं, मैं क्यों सहनशील हूँ इसका एक कारण नहीं है।

5तू मुझ को देख और तू स्तंभित हो जा, अपना हाथ अपने मुख पर रख और मुझे देख और स्तब्ध हो।

6जब मैं सोचता हूँ उन सब को जो कुछ मेरेसाथ घटा तो मुझको डर लगता है और मेरी देह थर थर काँपती है।

7क्यों बुरे लोगों की उम्र लम्बी होती है? क्यों वे वृद्ध और सफल होते हैं?

8बुरे लोग अपनी संतानों को अपने साथ बढ़ते हुए देखते हैं। बुरे लोग अपनी नाती–पोतों को देखने को जीवित रहा करते हैं।

9उनके घर सुरक्षित रहते हैं और वे नहीं डरतेहैं। परमेश्वर दुष्टों को सजा देने के लिये अपना दण्ड काम में नहीं लाता है।

10उनके सांड कभी भी बिना जोड़ा बांधे नहीं रहे, उनकी गायों के बछेरे होते हैं और उनके गर्भ कभी नहीं गिरते हैं।

11बुरे लोग बच्चों को बाहर खेलने भेजते हैं मेमनों के जैसे, उनके बच्चे नाचते हैं चारों ओर।

12वीणा और बाँसुरी के स्वर पर वे गाते और नाचते हैं।

13बुरे लोग अपने जीवन भर सफलता का आनन्द लेते हैं। फिर बिना दुःख भोगे वे मर जाते हैं और अपनी कब्रों के बीच चले जाते हैं।

14किन्तु बुरे लोग परमेश्वर से कहा करते हैं, 'हमें अकेला छोड़ दे। और इसकी हमें परवाह नहीं कि तू हमसे कैसा जीवन जीना चाहता है।'

15दुष्ट लोग कहा करते हैं, 'सर्वशक्तिमान परमेश्वर कौन है? हमको उसकी सेवा की जरुरत नहीं है। उसकी प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं।'

16दुष्ट जन सोचते है कि उनको अपने ही कारण सफलताऐं मिलती हैं, किन्तु मैं उनके विचारों को नहीं अपना सकता हूँ।

17किन्तु क्या प्राय: ऐसा होता है कि दुष्ट जन का प्रकाश बुझ जाया करता है? कितनी बार दुष्टों को दुःख घेरा करते हैं? क्या परमेश्वर उनसे कुपित हुआ करता है, और उन्हें दण्ड देता है?

18क्या परमेश्वर दुष्ट लोगों को ऐसे उड़ाता है जैसे हवा तिनके को उड़ाती है और तेज हवायें अन्न का भूसा उड़ा देती हैं?

19किन्तु तू कहता है: 'परमेश्वर एक बच्चे को उसके पिता के पापों का दण्ड देता है।' नहीं, परमेश्वर को चाहिये कि बुरे जन को दण्डित करें। तब वह बुरा व्यक्ति जानेगा कि उसे उसके निज पापों के लिये दण्ड मिल रहा है।

20तू पापी को उसके अपने दण्ड को दिखा दे, तब वह सर्वशक्तिशाली परमेश्वर के कोप का अनुभव करेगा।

21जब बुरे व्यक्ति की आयु के महीने समाप्त हो जाते हैं और वह मर जाता है; वह उस परिवार की परवाह नहीं करता जिसे वह पीछे छोड़ जाता है।

22कोई व्यक्ति परमेश्वर को ज्ञान नहीं दे सकता, वह ऊँचे पदों के जनों का भी न्याय करता है।

23एक पूरे और सफल जीवन के जीने के बाद एक व्यक्ति मरता है, उसने एक सुरक्षित और सुखी जीवन जिया है।

24उसकी काया को भरपूर भोजन मिला था अब तक उस की हड्डियाँ स्वस्थ थीं।

25किन्तु कोई एक और व्यक्ति कठिन जीवन के बाद दुःख भरे मन से मरता है, उसने जीवन का कभी कोई रस नहीं चखा।

26ये दोनो व्यक्ति एक साथ माटी में गड़े सोते हैं, कीड़े दोनों को एक जैसे ढक लेंगे।

27किन्तु मैं जानता हूँ कि तू क्या सोच रहा है, और मुझको पता है कि तरे पास मेरा बुरा करने को कुचक्र है।

28मेरे लिये तू यह कहा करता है कि 'अब कहाँ है उस महाव्यक्ति का घर? कहाँ है वह घर जिसमें वह दुष्ट रहता था?'

29किन्तु तूने कभी बटोहियों से नहीं पूछा और उनकी कहानियों को नहीं माना।

30कि उस दिन जब परमेश्वर कुपित हो कर दण्ड देता है दुष्ट जन सदा बच जाता है।

31ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो उसके मुख पर ही उसके कर्मों की बुराई करे, उसके बुरे कर्मों का दण्ड कोई व्यक्ति उसे नहीं देता।

32जब कोई दुष्ट व्यक्ति कब्र में ले जाया जाताहै, तो उसके कब्र के पास एक पहरेदार खड़ा रहता है।

33उस दुष्ट जन के लिये उस घाटी की मिट्टी मधुर होगी, उसकी शव-यात्रा में हजारों लोग होंगे।

34सो अपने कोरे शब्दों से तू मुझे चैन नहीं दे सकता, तेरे उत्तर केवल झूठे हैं।"

एलीपज का उत्तर

22 फिर तेमान नगर के एलीपज ने उत्तर देते हुए कहा:

2"परमेश्वर को कोई भी व्यक्ति सहारा नहीं दे सकता, यहाँ तक की वह भी जो बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हो परमेश्वर के लिये हितकर नहीं हो सकता।

3यदि तूने वही किया जो उचित था तो इससे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को आनन्द नहीं मिलेगा, और यदि तू सदा खरा रहा तो इससे उसको कुछ नहीं मिलेगा।

4अय्यूब, तुझको परमेश्वर क्यों दण्ड देता है और क्यों तुझ पर दोष लगाता है? क्या इसलिए कि तू उसका सम्मान नहीं करता?

5नहीं, ये इसलिए की तूने बहुत से पाप किये हैं, अय्यूब, तेरे पाप नहीं रुकते हैं।

6अय्यूब, सम्भव है कि तूने अपने किसी भाई को कुछ धन दिया हो, और उसको दबाया हो कि वह कुछ गिरवी रख दे ताकि ये प्रमाणित हो सके कि वह तेरा धन वापस करेगा। सम्भव है किसी दीन के कर्जे के बदले तूने कपड़े गिरवी रख लिये हों, सम्भव है तूने वह व्यर्थ ही किया हो।

7तूने थके-मांदे लोगों को जल नहीं दिया, तूने भूखों के लिये भोजन नहीं दिया।

8अय्यूब, यद्यपि तू शक्तिशाली और धनी था, तूने उन लोगों को सहारा नहीं दिया। तू बड़ा जमींदार और सामर्थी पुरुष था,

9किन्तु तूने विधवाओं को बिना कुछ दिये लौटा दिया। अय्यूब, तूने अनाथ बच्चों को लूट लिया और उनसे बुरा व्यवहार किया।

10इसलिए तेरे चारों तरफ जाल बिछे हुए हैं और तुझ को अचानक आती विपत्तियाँ डराती हैं।

11इसलिए इतना अंधकार है कि तुझे सूझ पड़ताहै और इसलिए बाढ़ का पानी तुझे निगल रहा है।

12परमेश्वर आकाश के उच्चतम भाग में रहताहै, वह सर्वोच्च तारों के नीचे देखता है, तू देख सकता है कि तारे कितने ऊँचे हैं।

13किन्तु अय्यूब, तू तो कहा करता है कि परमेश्वर कुछ नहीं जानता, काले बादलों से कैसे परमेश्वर हमें जाँच सकता है?

14घने बादल उसे छुपा लेते हैं, इसलिये जब वह आकाश के उच्चतम भाग में विचरता है तो हमें ऊपर आकाश से देख नहीं सकता।

15अय्यूब, तू उस ही पुरानी राह पर जिन पर दुष्ट लोग चला करते हैं, चल रहा है।

16अपनी मृत्यु के समय से पहले ही दुष्ट लोग उठा लिये गये, बाढ़ उनको बहा कर ले गयी थी।

17ये वही लोग है जो परमेश्वर से कहते हैं कि हमें अकेला छोड़ दो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारा कुछ नहीं कर सकता है।

18किन्तु परमेश्वर ने उन लोगों को सफल बनायाहै और उन्हें धनवान बना दिया। किन्तु मैं वह ढंग से जिससे दुष्ट सोचते हैं, अपना नहीं सकता हूँ।

19सज्जन जब बुरे लोगों का नाश देखते हैं, तो वे प्रसन्न होते है। पापरहित लोग दुष्टों पर हँसते है, और कहा करते हैं,

20हमारे शत्रु सचमुच नष्ट हो गये! आग उनके धन को जला देती है।

21अय्यूब, अब स्वयं को तू परमेश्वर को अर्पित कर
दे, तब तू शांति पायेगा। यदि तू ऐसा करे तो तू धन्य और
सफल हो जायेगा।

22उसकी सीख अपना ले, और उसके शब्द निज मन
में सुरक्षित रख।

23अय्यूब, यदि तू फिर सर्वशक्तिमान परमेश्वरके
पास आये तो फिर से पहले जैसा हो जायेगा। तुझको
अपने घर से पाप को बहुत दूर करना चाहिए।

24तुझको चाहिये कि तू निज सोना धूल में और निज
ओपीर का कुन्दन नदी में चट्टानों पर फेंक दे।

25तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर तेरे लिये सोना और
चाँदी बन जायेगा।

26तब तू अति प्रसन्न होगा और तुझे सुख मिलेगा।
परमेश्वर के सामने तू बिना किसी शर्म के सिर उठा
सकेगा।

27जब तू उसकी विनती करेगा तो वह तेरी सुना
करेगा, जो प्रतिज्ञा तूने उससे की थी, तू उसे पूरा कर
सकेगा।

28जो कुछ तू करेगा उसमें तुझे सफलता मिलेगी, तेरे
मार्ग पर प्रकाश चमकेगा।

29परमेश्वर अहंकारी जन को लज्जित करेगा, किन्तु
परमेश्वर नम्र व्यक्ति की रक्षा करेगा।

30परमेश्वर जो मनुष्य भोला नहीं है उसकी भी
रक्षा करेगा, तेरे हाथों की स्वच्छता से उसको उद्धार
मिलेगा।"

23 फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुये कहा:
2"मै आज भी बुरी तरह शिकायत करता हूँ
कि परमेश्वर मुझे कड़ा दण्ड दे रहा है, इसलिये मैं
शिकायत करता रहता हूँ।

3काश! मैं यह जान पाता कि उसे कहाँ खोजूँ!काश!
मैं जान पाता की परमेश्वर के पास कैसे जाऊँ!

4मैं अपनी कथा परमेश्वर को सुनाता, मेरा मुँह
युक्तियों से भरा होता यह दर्शाने को कि मैं निर्दोष हूँ।

5मैं यह जानना चाहता हूँ कि परमेश्वर कैसे मेरे
तर्को का उत्तर देता है, तब मैं परमेश्वर के उत्तर समझ
पाता।

6क्या परमेश्वर अपनी महाशक्ति के साथ मेरे विरुद्ध
होता? नहीं! वह मेरी सुनेगा।

7मैं एक नेक व्यक्ति हूँ। परमेश्वर मुझे अपनी कहानी
को कहने देगा,तब मेरा न्यायकर्ता परमेश्वर मुझे मुक्त
कर देगा।

8किन्तु यदि मैं पूरब को जाऊँ तो परमेश्वर वहाँ नहीं
है और यदि मैं पश्चिम को जाऊँ, तो भी परमेश्वर मुझे
नहीं दिखता है।

9परमेश्वर जब उत्तर में क्रियाशील रहता है तो मैं
उसे देख नहीं पाता हूँ। जब परमेश्वर दक्षिण को मुड़ता
है, तो भी वह मुझको नहीं दिखता है।

10किन्तु परमेश्वर मेरे हर चरण को देखता है, जिसको
मैं उठाता हूँ। जब वह मेरी परीक्षा ले चुकेगा तो वह
देखेगा कि मुझमें कुछ भी बुरा नहीं है, वह देखेगा कि
मैं खरे सोने सा हूँ।

11परमेश्वर जिस को चाहता है मैं सदा उस पर चला
हूँ, मैं कभी भी परमेश्वर की राह पर चलने से नहीं
मुड़ा।

12मैं सदा वही बात करता हूँ जिनकी आशा परमेश्वर
देता है। मैंने अपने मुख के भोजन से अधिक परमेश्वर
के मुख के शब्दों से प्रेम किया है।

13किन्तु परमेश्वर कभी नहीं बदलता। कोई भी व्यक्ति
उसके विरुद्ध खड़ा नहीं रह सकता है। परमेश्वर जो भी
चाहता है, करता है।

14परमेश्वर ने जो भी योजना मेरे विरोध में बना ली
है वही करेगा, उसके पास मेरे लिये और भी बहुत सारी
योजनायें है।

15मैं इसलिये डरता हूँ, जब इन सब बातों के बारे में
सोचता हूँ। इसलिये परमेश्वर मुझको भयभीत करताहै।

16परमेश्वर मेरे हृदय को दुर्बल करता है और मेरी
हिम्मत टूटती है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर मुझको भयभीत
करता है। 17यद्यपि मेरा मुख सघन अंधकार ढकता है
तो भी अंधकार मुझे चुप नहीं कर सकता है।

24 "सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्यों नहीं न्याय करने
के लिये समय नियुक्त करता है? लोग जो
परमेश्वर को मानते हैं उन्हें क्यों न्याय के समय की
व्यर्थ बाट जोहनी पड़ती है?"

2"लोग अपनी सम्पत्ति के चिन्हों को, जो उसकी सीमा
बताते हैं, सरकाते रहते हैं ताकि अपने पड़ोसी की थोड़ी
और धरती हड़प लें! लोग पशु को चुरा लेते हैं और
उन्हें अन्य चारागाहों में हाँक ले जाते हैं।

3अनाथ बच्चों के गधे को वे चुरा ले जाते हैं। विधवा
की गाय वे खोल ले जाते है। जब तक की वह उनका
कर्ज नहीं चुकाती है।

4वे दीन जन को मजबूर करते है कि वह छोड़ कर
दूर हट जाने को विवश हो जाता है, इन दुष्टों से स्वयं
को छिपाने को।

5वे दीन जन उन जंगली गदहों जैसे हैं जो मरुभूमि में
अपना चारा खोजा करते हैं। गरीबों और उनके बच्चों
को मरुभूमि भोजन दिया करता है।

6गरीब लोग भूसा और चारा साथ साथ ऐसे उन खेतों
से पाते हैं जिनके वे अब स्वामी नहीं रहे। दुष्टों के
अंगूरों के बगीचों से बचे फल वे बीना करते हैं।

7दीन जन को बिना कपड़ों के रातें बितानी होंगी,
सर्दी में उनके पास अपने ऊपर ओढ़ने को कुछ नहीं
होगा। 8वे वर्षा से पहाड़ों में भीगें हैं, उन्हें बड़ी चट्टानों
से सटे हुये रहना होगा, क्योंकि उनके पास कुछ नहीं
जो उन्हें मौसम से बचा ले।

9बुरे लोग माता से वह बच्चा जिसका पिता नहीं है छीन लेते हैं। गरीब का बच्चा लिया करते हैं, उसके बच्चे को, कर्ज के बदले में वे बन्धुवा बना लेते हैं।

10गरीब लोगों के पास वस्त्र नहीं होते हैं, सो वे काम करते हुये नंगे रहा करते हैं। दुष्टों के गट्ठर का भार वे ढोते है, किन्तु फिर भी वे भूखे रहते हैं।

11गरीब लोग जैतून का तेल पेर कर निकालतेहैं। वे कुंडो में अंगूर रौंदते हैं फिर भी वे प्यासे रहते हैं।

12मरते हुये लोग जो आहें भरते हैं। वे नगर में सुनाई देती हैं। सताये हुये लोग सहारे को पुकारते हैं, किन्तु परमेश्वर नहीं सुनता है।

13कुछ ऐसे लोग हैं जो प्रकाश के विरुद्ध होते हैं। वे नहीं जानना चाहते हैं कि परमेश्वर उनसे क्या करवाना चाहता है। परमेश्वर की राह पर वे नहीं चलते हैं।

14हत्यारा तड़के जाग जाया करता है गरीबों और जरुरत मंद लोगों की हत्या करता है, और रात में चोर बन जाता है।

15वह व्यक्ति जो व्यभिचार करता है, रात आने की बाट जोहा करता है, वह सोचता है उस कोई नहीं देखेगा और वह अपना मुख ढक लेता है।

16दुष्ट जन जब रात में अंधेरा होता है, तो सेंध लगा कर घर में घुसते हैं। किन्तु दिन में वे अपने ही घरों में छुपे रहते हैं, वे प्रकाश से बचते हैं।

17उन दुष्ट लोगों का अंधकार सुबह सा होता हैं, वे आतंक व अंधेरे के मित्र होते है।

18दुष्ट जन ऐसे बहा दिये जाते हैं, जैसे झाग बाढ़ के पानी पर। वह धरती अभिशिप्त है जिसके वे मालिक हैं, इसलिये वे अंगूर के बगीचों में अंगूर बीनने नहीं जाते हैं।

19जैसे गर्म व सूखा मौसम पिघलती बर्फ के जल को सोख लेता है, वैसे ही दुष्ट लोग कब्र द्वारा निगले जायेंगे।

20दुष्ट मरने के बाद उसकी माँ तक उसे भूल जायेगी, दुष्ट की देह को कीड़े खा जायेंगे। उसको थोड़ा भी नहीं याद रखा जायेगा, दुष्ट जन गिरे हुये पेड़ से नष्ट किये जायेंगे।

21ऐसी स्त्री को जिसके बच्चे नहीं हो सकते, दुष्ट जन उन्हें सताया करते हैं, वे उस स्त्री को दु:ख देते हैं, वे किसी विधवा के प्रति दया नहीं दिखाते हैं।

22बुरे लोग अपनी शक्ति का उपयोग बलशाली को नष्ट करने के लिये करते है। बुरे लोग शक्तिशाली हो जायेंगे, किन्तु अपने ही जीवन का उन्हें भरोसा नहीं होगा कि वे अधिक दिन जी पायेंगे।

23सम्भव है थोड़े समय के लिये परमेश्वर शक्तिशाली को सुरक्षित रहने दे, किन्तु परमेश्वर सदा उन पर आँख रखता है।

24दुष्ट जन थोड़े से समय के लिये सफलता पा जाते हैं किन्तु फिर वे नष्ट हो जाते हैं। दूसरे लोगों की तरह वे भी समेट लिये जाते हैं। अन्न की कटी हुई बाल के समान वे गिर जाते हैं।

25यदि ये बातें सत्य नहीं हैं तो कौन प्रमाणित कर सकता है कि मैंने झूठ कहा है? कौन दिखा सकता है कि मेरे शब्द प्रलय मात्र हैं?"

बिल्दद का अय्यूब को उत्तर

25 फिर शूह प्रदेश के निवासी बिल्दद ने उत्तर देते हुये कहा:

2"परमेश्वर शासक है और हर व्यक्ति को चाहिये की परमेश्वर से डरे और उसका मान करे। परमेश्वर अपने स्वर्ग के राज्य में शांति रखताहै।

3कोई उसकी सेनाओं को गिन नहीं सकता है, परमेश्वर का प्रकाश सब पर चमकता है।

4किन्तु सचमुच परमेश्वर के आगे कोई व्यक्ति उचित नहीं ठहर सकता है। कोई व्यक्ति जो स्त्री से उत्पन्न हुआ सचमुच निर्दोष नहीं हो सकता है।

5परमेश्वर की आँखों के सामने चाँद तक चमकीला नहीं है। परमेश्वर की आँखों के सामने तारे निर्मल नहीं हैं।

6मनुष्य तो बहुत कम भले है। मनुष्य तो बस गिंडार है एक ऐसा कीड़ा जो बेकार का होता है।"

अय्यूब का बिल्दद को उत्तर:

26 तब अय्यूब ने कहा:

2"हे बिल्दद, सोपर और एलीपज़ जो लोग दुर्बल हैं तुम सचमुच उनको सहारा दे सकते हो। अरे हाँ! तुमने दुर्बल बाँहों को फिर से शक्तिशाली बनाया है।

3हाँ, तुमने निर्बुद्धि को अद्भुत सम्मत्ति दी है। कैसा महाज्ञान तुमने दिखाया है!

4इन बातों को कहने में किसने तुम्हारी सहायता की? किसकी आत्मा ने तुम को प्रेरणा दी?

5जो लोग मर गये है उनकी आत्मायें धरती के नीचे जल में भय से प्रकंपित हैं।

6मृत्यु का स्थान परमेश्वर की आँखों के सामने खुला है, परमेश्वर के आगे विनाश का स्थान ढका नहीं है।

7उत्तर के नभ को परमेश्वर फैलाता है। परमेश्वर ने व्योम के रिक्त पर अधर में धरती लटकायी है।

8परमेश्वर बादलों को जल से भरता है, किन्तु जल के प्रभार से परमेश्वर बादलों को फटने नहीं देता है।

9परमेश्वर पूरे चन्द्रमा को ढकता है, परमेश्वर चाँद पर निज बादल फैलाता है और उसको ढक देता है।

10परमेश्वर क्षितिज को रचता है प्रकाश और अन्धकार की सीमा रेखा के रूप में समुद्र पर।

11जब परमेश्वर डाँटता है तो वे नीवें जिन पर आकाश टिका है भय से काँपने लगती है।

12परमेश्वर की शक्ति सागर को शांत कर देतीहै। परमेश्वर की बुद्धि ने राहब (सागर के दैत्य) को नष्ट किया।

13परमेश्वर का श्वास नभ को साफ कर देता है। परमेश्वर के हाथ ने उस साँप को मार दिया जिसमें भाग जाने का यत्न किया था।

14ये तो परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की थोड़ी सी बातें हैं। बस हम थोड़ा सा परमेश्वर के हल्की–ध्वनि भरे स्वर को सुनते हैं। किन्तु सचमुच कोई व्यक्ति परमेश्वर के शक्ति के गर्जन को नहीं समझ सकता है।"

27 फिर अय्यूब ने आगे कहा:

2"सचमुच परमेश्वर जीता है और यह जितनासत्य है कि परमेश्वर जीता है सचमुच वह वैसै ही मेरे प्रति अन्यायपूर्ण रहा है। हाँ! सर्वशक्तिशाली परमेश्वर ने मेरे जीवन मे कड़वाहट भरी है।

3किन्तु जब तक मुझ में प्राण है और परमेश्वर का साँस मेरी नाक में है।

4तब तक मेरे होंठ बुरी बातें नहीं बोलेंगे, और मेरी जीभ कभी झूठ नहीं बोलेगी।

5मैं कभी नहीं मानूँगा कि तुम लोग सही हो! जब तक मैं मरूँगा उस दिन तक कहता रहूँगा कि मैं निर्दोष हूँ!

6मैं अपनी धार्मिकता को दृढता से थामें रहूँगा। मैं कभी उचित कर्म करना न छोड़ूँगा। मेरी चेतना मुझे तंग नहीं करेगी जब तक मैं जीता हूँ।

7मेरे शत्रुओं को दुष्ट जैसा बनने दे, और उन्हें दण्डित होने दे जैसे दुष्ट जन दण्डित होते हैं।

8ऐसे उस व्यक्ति के लिये मरते समय कोई आशा नहीं है जो परमेश्वर की परवाह नहीं करताहै। जब परमेश्वर उसके प्राण लेगा तब तक उसके लिये कोई आशा नहीं है।

9जब वह बुरा व्यक्ति दुःखी पड़ेगा और उसको पुकारेगा, परमेश्वर नहीं सुनेगा।

10उसको चाहिये था कि वह उस आनन्द कोचाहे जिसे केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर देता है। उसको चाहिए की वह हर समय परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा।

11मैं तुमको परमेश्वर की शक्ति सिखाऊँगा। मैं सर्वशक्तिशाली परमेश्वर की योजनायें नहीं छिपाऊँगा।

12स्वयं तूने निज आँखों से परमेश्वर की शक्ति देखी है, सो क्यों तू व्यर्थ बातें बनाता है?

13दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर ने ऐसी योजना बनाई है, दुष्ट लोगों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से ऐसा ही मिलेगा।

14दुष्ट की चाहे कितनी ही संताने हों, किन्तु उसकी संताने युद्ध में मारी जायेंगी। दुष्ट की संताने कभी भरपेट खाना नहीं पायेंगी।

15और यदि दुष्ट की संताने उसकी मृत्यु के बाद भी जीवित रहें तो महामारी उनको मार डालेंगी! उनके पुत्रों की विधवायें उनके लिये दुःखी नहीं होंगी।

16दुष्ट जन चाहे चाँदी के ढेर इकट्ठा करे, इतने विशाल ढेर जितनी धूल होती है, मिट्टी के ढेरों जैसे वस्त्र हों उसके पास

17जिन वस्त्रों को दुष्ट जन जुटाता रहा उन वस्त्रों को सज्जन पहनेगा, दुष्ट की चाँदी निर्दोषों में बँटेगी।

18दुष्ट का बनाया हुआ घर अधिक दिनों नहीं टिकता है, वह मकड़ी के जाले सा अथवा किसी चौकीदार के छप्पर जैसा अस्थिर होता है।

19दुष्ट जन अपनी निज दौलत के साथ अपने बिस्तर पर सोने जाता है, किन्तु एक ऐसा दिन आयेगा जब वह फिर बिस्तर में वैसे ही नहीं जा पायेगा। जब वह आँख खोलेगा तो उसकी सम्पत्ति जा चुकेगी।

20दुःख अचानक आई हुई बाढ़ सा उसको झपट लेंगे, उसको रातों रात तूफान उड़ा ले जायेगा।

21पुरवाई पवन उसको दूर उड़ा देगी, तूफान उसको बुहार कर उसके घर के बाहर करेगा।

22दुष्ट जन तुफान की शक्ति से बाहर निकलने का जतन करेगा किन्तु तूफान उस पर बिना दया किये हुये चपेट मारेगा।

23जब दुष्ट जन भागेगा, लोग उस पर तालियाँ बजायेंगे, दुष्ट जन जब निकल भागेगा। अपने घर से तो लोग उस पर सीटियाँ बजायेंगे।

28 "वहाँ चाँदी की खान है जहाँ लोग चाँदी पाते है, वहाँ ऐसे स्थान है जहाँ लोग सोना पिघला कर के उसे शुद्ध करते हैं।

2लोग धरती से खोद कर लोहा निकालते हैं, और चट्टानों से पिघला कर ताँबा निकालते हैं।

3लोग गुफाओं में प्रकाश को लाते हैं वे गुफाओं की गहराई में खोजा करते हैं, गहरे अन्धेरे में वे खनिज की चट्टानें खोजते हैं।

4जहाँ लोग रहते है उससे बहुत दूर लोग गहरे गढ़े खोदा करते हैं, कभी किसी और ने इन गढ़ों को नहीं छुआ। जब व्यक्ति गहन गर्तो में रस्से से लटकता है, तो वह दूसरों से बहुत दूर होता है।

5भोजन धरती की सतह से मिला करता है, किन्तु धरती के भीतर वह बढ़त जाया करता है जैसे आग वस्तुओं को बदल देती है।

6धरती के भीतर चट्टानों के नीचे नीलम मिल जाते हैं, और धरती के नीचे मिट्टी अपने आप में सोना रखती है।

7जंगल के पक्षी धरती के नीचे की राहें नहीं जानते हैं न ही कोई बाज यह मार्ग देखता है।

8इस राह पर हिंसक पशु नहीं चले, कभी सिंह इस राह पर नहीं विचरे।

9मजदूर कठिन चट्टानों को खोदते हैं और पहाड़ों को वे खोद कर जड़ से साफ कर देते हैं।

10काम करने वाले सुरंगे काटते हैं, वे चट्टान के खजाने को चट्टानों के भीतर देख लिया करते हैं।

11काम करने वाले बाँध बाँधा करते हैं कि पानी कहीं ऊपर से होकर न बह जाये। वे छुपी हुई वस्तुओं को ऊपर प्रकाश में लातेहैं।

12किन्तु कोई व्यक्ति विवेक कहाँ पा सकता है? और हम कहाँ जा सकते हैं समझ पाने को?

13ज्ञान कहाँ रहता है लोग नहीं जानते हैं, लोग जो धरती पर रहते हैं, उनमें विवेक नहीं रहता है।

14सागर की गहराई कहती है, 'मुझ में विवेक नहीं।' और समुद्र कहता है, 'यहाँ मुझ में ज्ञान नहींहै।'

15विवेक को अति मूल्यवान सोना भी मोल नहीं ले सकता है, विवेक का मूल्य चाँदी से नहीं गिना जा सकता है।

16विवेक ओपीर देश के सोने से अथवा मूल्यवान स्फटिक से अथवा नीलमणियों से नहीं खरीदा जा सकता है।

17विवेक सोने और स्फटिक से अधिक मूल्यवानहै, कोई व्यक्ति अति मूल्यवान सुवर्ण जड़ित रत्नों से विवेक नहीं खरीद सकता है।

18विवेक मूंगे और सूर्यकांत मणि से अति मूल्यवान है। विवेक मानक मणियों से अधिक महंगा है।

19जितना उत्तम विवेक है कूश देश का पद्मराग भी उतना उत्तम नहीं है। विवेक को तुम कुन्दन से मोल नहीं ले सकतेहो।

20तो फिर हम कहाँ विवेक को पाने जायें? हम कहाँ समझ सीखने जायें?

21विवेक धरती के हर व्यक्ति से छुपा हुआ है। यहाँ तक की ऊँचे आकाश के पक्षी भी विवेक को नहीं देख पाते हैं।

22मृत्यु और विनाश कहा करते हैं कि हमने तो बस विवेक की बाते सुनी हैं।

23किन्तु बस परमेश्वर विवेक तक पहुँचने की राह को जानता है। परमेश्वर जानता है विवेक कहाँ रहता है।

24परमेश्वर विवेक को जानता है क्योंकि वह धरती के आखिरी छोर तक देखा करता है। परमेश्वर हर उस वस्तु को जो आकाश के नीचे है देखा करता है।

25जब परमेश्वर ने पवन को उसकी शक्ति प्रदान की और यह निश्चित किया कि समुद्रों को कितना बड़ा बनाना है।

26और जब परमेश्वर ने निश्चय किया कि उसे कहाँ वर्षा को भेजना है, और बवण्डरों को कहाँ की
यात्रा करनी है। 27तब परमेश्वर ने विवेक को देखा था,
और उसको यह देखने के लिये परखा था कि विवेक का कितना मूल्य है, तब परमेश्वर ने विवेक का समर्थन किया था।

28और लोगों से परमेश्वर ने कहा था कि 'यहोवा का भय मानो और उसको आदरदो।' बुराईयों से मुख मोड़ना ही विवेक है, यही समझदारी है।"

अय्यूब अपनी बात जारी रखता है

29 अपनी बात को जारी रखते हुये अय्यूब नेकहा:
2"काश! मेरा जीवन वैसा ही होता जैसा गुजरे
महीनों में था। जब परमेश्वर मेरी रखवाली करता था, और मेरा ध्यान रखता था।

3मैं ऐसे उस समय की इच्छा करता हूँ जब परमेश्वर का प्रकाश मेरे शीश पर चमक रहा था। मुझ को प्रकाश दिखाने को उस समय जब मैं अन्धेरे से हो कर चला करता था।

4ऐसे उन दिनों की मैं इच्छा करता हूँ,जब मेरा जीवन सफल था, और परमेश्वर मेरा निकट मित्र था। वे ऐसे दिन थे जब परमेश्वर ने मेरे घर को आशीष दी थी।

5ऐसे समय की मैं इच्छा करता हूँ, जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर अभी तक मेरे साथ में था और मेरे पास मेरे बच्चे थे।

6ऐसा तब था जब मेरा जीवन बहुत अच्छा था, ऐसा लगा करता था कि दूध-दही की नदियाँ बहा करती थी, और मेरे हेतू चट्टाने जैतून के तेल की नदियाँ उँडेल रही हैं।

7ये वे दिन थे जब मैं नगर-द्वार और खुले स्थानों में जाता था, और नगर नेताओं के साथ बैठता था।

8वहाँ सभी लोग मेरा मान किया करते थे। युवा पुरुष जब मुझे देखते थे तो मेरी राह से हट जाया करते थे। और वृद्ध पुरुष मेरे प्रति सम्मान दर्शाने के लिये उठ खड़े होते थे।

9जब लोगों के मुखिया मुझे देख लेते थे, तो बोलना बन्द किया करते थे।

10यहाँ तक की अत्यन्त महत्वपूर्ण नेता भी अपना स्वर नीचा कर लेते थे, जब मैं उनके निकट जाया करता था। हाँ! ऐसा लगा करता था कि उनकी जिहवायें उनके तालू से चिपकी हों।

11जिस किसी ने भी मुझको बोलते सुना, मेरे विषय में अच्छी बात कही, जिस किसी ने भी मुझको देखा था, मेरी प्रशंसा की थी।

12क्यों? क्योंकि जब किसी दीन ने सहायता के लिये पुकारा, मैंने सहायता की। उस बच्चे को मैने सहारा दिया जिसके माँ बाप नहीं और जिसका कोई भी नहीं ध्यान रखने को।

13मुझको मरते हुये व्यक्ति की आशीष मिली, मैंने उन विधवाओं को जो जरुरत में थी, मैंने सहारा दिया और उनको खुश किया।

14मेरा वस्त्र खरा जीवन था, निष्पक्षता मेरे चोगे और मेरी पगड़ी सी थी।

15मैं अंधो के लिये आँखे बन गया और मैं उनके पैर बना जिनके पैर नहीं थे।

16दीन लोगों के लिये मैं पिता के तुल्य था, मैं पक्ष लिया करता था ऐसे अनजानों का जो विपत्ति में पड़े थे।

17मैं दुष्ट लोगों की शक्ति नष्ट करता था। निर्दोष लोगों को मैं दुष्टों से छुड़ाता था।

18मैं सोचा करता था कि सदा जीऊँगा ओर बहुत दिनों बाद फिर अपने ही घर में प्राण त्यागूँगा।

19मैं एक ऐसा स्वस्थ वृक्ष बनूँगा जिसकी जड़े सदा जल में रहती हों और जिसकी शाखायें सदा ओस से भीगी रहती हों।

20मेरी शान सदा ही नई बनी रहेगी, मैं सदा वैसा ही बलवान रहूँगा जैसे, मेरे हाथ में एक नया धनुष।

21पहले, लोग मेरी बात सुना करते थे, और वे जब मेरी सम्मत्ति की प्रतिक्षा किया करतेथे, तो चुप रहा करते थे।

22मेरे बोल चुकने के बाद, उन लोगों के पास जो मेरी बात सुनते थे, कुछ भी बोलने को नहीं होता था। मेरे शब्द धीरे-धीरे उनके कानों में वर्षा की तरह पड़ा करते थे।

23लोग जैसे वर्षा की बाट जोहते हैं वैसे ही वे मेरे बोलने की बाट जोहा करते थे। मेरे शब्दों को वे पी जाया करते थे, जैसे मेरे शब्द बसन्त में वर्षा हों।

24जब मैं दया करने को उन पर मुस्कराता था, तो उन्हें इसका यकीन नहीं होता था। फिर मेरा प्रसन्न मुख दुःखी जन को सुख देता था।

25मैंने उत्तरदायित्व लिया और लोगों के लिये निर्णय किये, मैं नेता बन गया। मैंने उनकी सेना के दलों के बीच राजा जैसा जीवन जिया। मैं ऐसा व्यक्ति था जो उन लोगों को चैन देता था जो बहुत ही दुःखी है।

30 "अब, आयु में छोटे लोग मेरा मजाक बनातेहैं। उन युवा पुरुषों के पिता बिलकुल ही निकम्मेंथे। जिनको मैं उन कुत्तों तक की सहायता नहीं करने देता था जो भेड़ों के रखवाले हैं।

2उन युवा पुरुषों के पिता मुझे सहारा देने की कोई शक्ति नहीं रखते हैं, वे बूढे हो चुके हैं और थके हुये हैं।

3वे व्यक्ति मुर्दे जैसे हैं क्योंकि खाने को उनके पास कुछ नहीं है और वे भूखे हैं, सो वे मरुभूमि के सूखे कन्द खाना चाहते हैं।

4वे लोग मरुभूमि में खारे पौधों को उखाड़ते हैं और वे पीले फूल वाले पीलू के पेड़ों की जड़ों को खाते हैं।

5वे लोग, दूसरे लोगों से भगाये गये हैं लोग जैसे चोर पर पुकारते हैं उन पर पुकारते हैं।

6ऐसे वे बूढ़े लोग सूखी हुई नदी के तलों में चट्टानों के सहारे और धरती के बिलों में रहने को विवश हैं।

7वे झाड़ियों के भीतर रेंकते हैं। कंटीली झाड़ियों के नीचे वे आपस में एकत्र होते हैं।

8वे बेकार के लोगों का दल है, जिनके नाम तक नहीं हैं। उनको अपना गाँव छोड़ने को मजबूर किया गया है।

9अब ऐसे उन लोगो के पुत्र मेरी हँसी उड़ाने को मेरे विषय में गीत गाते हैं। मेरा नाम उनके लिये अपशब्द सा बन गया है।

10वे युवक मुझसे घृणा करते हैं। वे मुझसे दूर खड़े रहते हैं और सोचते हैं कि वे मुझसे उत्तम हैं। यहाँ तक कि वे मेरे मुँह पर थूकते हैं।

11परमेश्वर ने मेरे धनुष से उसकी डोर छीन ली है और मुझे दुर्बल किया है। वे युवक अपने आप नहीं रुकते हैंबल्कि क्रोधित होते हुये मुझ पर मेरे विरोध में हो जाते हैं।

12वे युवक मेरी दाहिनी ओर मुझ पर प्रहार करतेहैं। वे मुझे मिट्टी में गिराते हैं वे ढलुआ चबूतरे बनाते हैं मेरे विरोध में मुझ पर प्रहार करके मुझे नष्ट करने को।

13वे युवक मेरी राह पर निगरानी रखते हैं कि मै बच निकल कर भागने न पाऊँ। वे मुझे नष्ट करने में सफल हो जाते हैं। उन के विरोध में मेरी सहायता करने को मेरे साथ कोई नहीं है।

14वे मुझ पर ऐसे वार करते हैं, जैसे वे दिवार में सूराख निकाल रहें हो। एक के बाद एक आती लहर के समान वे मुझ पर झपट कर धावा करते हैं।

15मुझको भय जकड़ लेता है। जैसे हवा वस्तुओं को उड़ा ले जाती है, वैसी ही वे युवक मेरा आदर उड़ा देते हैं। जैसे मेघ अदृश्य हो जाता है, वैसे ही मेरी सुरक्षा अदृश्य हो जाती है।

16अब मेरा जीवन बीतने को है और मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा। मुझको संकट के दिनों ने दबोच लिया है।

17मेरी सब हड्डियाँ रात को दुखती हैं, पीड़ा मुझको चबाना नहीं छोड़ती है।

18मेरे गिरेबान को परमेश्वर बड़े बल से पकड़ताहै, वह मेरे कपड़ों का रूप बिगाड़ देता है।

19परमेश्वर मुझे कीच में धकेलता है और मैं मिट्टी व राख सा बनता हूँ।

20हे परमेश्वर, मैं सहारा पाने को तुझको पुकारता हूँ, किन्तु तू उत्तर नहीं देता है। मैं खड़ा होता हूँ और प्रार्थना करता हूँ, किन्तु तू मुझ पर ध्यान नहीं देता।

21हे परमेश्वर, तू मेरे लिये निर्दयी हो गया है, तू मुझे हानि पहुँचाने को अपनी शक्ति का प्रयोग करता है।

22हे परमेश्वर, तू मुझे तीव्र आँधी द्वारा उड़ा देता है। तूफान के बीच में तू मुझको थपेडे खिलाता है।

23मैं जानता हूँ तू मुझे मेरी मृत्यु की ओर ले जा रहा है जहाँ अन्त में हर किसी को जाना है।

24किन्तु निश्चय ही कोई मरे हुये को, और उसे जो सहायता के लिये पुकारता है, उसको नहीं मारता।

25हे परमेश्वर, तू तो यह जानता है कि मैं उनके लिये रोया जो संकट में पड़े हैं। तू तो यह जानता है कि मेरा मन गरीब लोगों के लिये बहुत दु:खी रहता था।

26किन्तु जब मैं भला चाहता था, तो बुरा हो जाता था। मैं प्रकाश ढूँढता था और अंधेरा छा जाता था।

27मैं भीतर से फट गया हूँ और यह ऐसा है कि कभी नहीं रुकता मेरे आगे संकट का समयहै।

28मैं सदा ही व्याकुल रहता हूँ। मुझको चैन नहीं मिल पाता है। मैं सभा के बीच में खड़ा होता हूँ, और सहारे को गुहारता हूँ।

29मैं जंगली कुत्तों के जैसा बन गया हूँ, मेरे मित्र बस केवल शतुर्मुर्ग ही हैं।

30मेरी त्वचा काली पड़ गई है। मेरा तन बुखार से तप रहा है।

31मेरी वीणा करुण गीत गाने को सधी है और मेरी बांसुरी से दु:ख के रोने जैसे स्वर निकलते हैं।

31 "मैंने अपनी आँखो के साथ एक सन्धि की है कि वे किसी लड़की पर वासनापूर्ण दृष्टि न डालें।

2सर्वशक्तिमान परमेश्वर लोगों के साथ कैसा करता है? वह कैसे अपने ऊँचे स्वर्ग के घर से उनके कर्मो का प्रतिफल देता है?

3दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर संकट और विनाश भेजता है, और जो बुरा करते हैं, उनके लिये विध्वंस भेजता है।

4मैं जो कुछ भी करता हूँ परमेश्वर जानता है और मेरे हर कदम को वह देखता है।

5यदि मैंने झूठा जीवन जिया हो या झूठ बोल कर लोगों को मूर्ख बनाया हो,

6तो वह मुझको खरी तराजू से तौले, तब परमेश्वर जान लेगा कि मैं निरपराध हूँ।

7यदि मैं खरे मार्ग से हटा होऊँ, यदि मेरी आँखे मेरे मन को बुरे की ओर ले गई हो अथवा मेरे हाथ पाप से गंदे हैं।

8तो मेरी उपजाई फसल अन्य लोग खा जाये और वे मेरी फसलों को उखाड़ कर ले जायें।

9यदि मैं स्त्रियों के लिये कामुक रहा होऊँ, अथवा यदि मैं अपने पड़ोसी के द्वार को उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार करने के लिये ताकता रहा होऊँ,

10तो मेरी पत्नी दूसरों का भोजन तैयार करे और उसके साथ पराये लोग सोयें।

11क्यों? क्योंकि यौन पाप लज्जापूर्ण होता है? यह ऐसा पाप है जो निश्चय ही दण्डित होना चाहिये।

12व्यभिचार उस पाप के समान है, जो जलाती और नष्ट कर डालती है। मेरे पास जो कुछ भी है व्यभिचार का पाप उसको जला डालेगा।

13यदि मैं अपने दास-दासियों के सामने उस समय निष्पक्ष नहीं रहा, जब उनको मुझसे कोई शिकायत रहीं।

14तो जब मुझे परमेश्वर के सामने जाना होगा, तो मैं क्या करूँगा? जब वह मुझ को मेरे कर्मो की सफाई माँगने बुलायेगा तो मैं परमेश्वर को क्या उत्तर दूँगा?

15परमेश्वर ने मुझको मेरी माता के गर्भ में बनाया, और मेरे दासों को भी उसने माता के गर्भ में हीं बनाया, उसने हम दोनो ही को अपनी-अपनी माता के भीतर ही रूप दिया है।

16मैंने कभी भी दीन जन की सहायता को मना नहीं किया। मैंने विधवाओं को सहारे बिना नहीं रहने दिया।

17मैं स्वार्थी नहीं रहा। मैंने अपने भोजन के साथ अनाथ बच्चों को भूखा नहीं रहने दिया।

18ऐसे बच्चों के लिये जिनके पिता नहीं हैं, मैं पिता के जैसा रहा हूँ। मैंने जीवन भर विधवाओं का ध्यान रखा है।

19जब मैंने किसी को इसलिये कष्ट भोगते पाया कि उसके पास वस्त्र नहीं हैं, अथवा मैंने किसी दीन को बिना कोट के पाया।

20तो मैं सदा उन लोगों को वस्त्र देता रहा, मैंने उन्हें गर्म रखने को मैंने स्वयं अपनी भेड़ों के ऊन का उपयोग किया, तो वे मुझे अपने समूचे मन से आशीष दिया करते थे।

21यदि कोई मैंने अनाथ को छलने का जतन अदालत में किया हो यह जानकर की मैं जीतूँ,

22तो मेरा हाथ मेरे कंधे के जोड़ से ऊतर जाये और मेरा हाथ कंधे पर से गिर जाये।

23किन्तु मैंने तो कोई वैसा बुरा काम नहीं किया। क्यो? क्योंकि मैं परमेश्वर के दण्ड से डरता रहा था।

24मैंने कभी अपने धन का भरोसा न किया, और मैंने कभी नहीं शुद्ध सोने से कहा कि 'तू मेरी आशा है!'

25मैंने कभी अपनी धनिकता का गर्व नहीं किया अथवा जो मैंने सम्पत्ति कमाई थी, उसके प्रति मैं आनन्दित हुआ।

26मैंने कभी चमकते सूरज की पूजा नहीं की अथवा मैंने सुन्दर चाँद की पूजा नहीं की।

27मैंने कभी इतनी मूर्खता नहीं की कि सूरज और
चाँद को पूजूँ। 28यदि मैंने इनमें से कुछ किया तो वो
मेरा पाप हो और मुझे उसका दण्ड मिले। क्योंकि मैं उन बातों को करते हुये सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का अविश्वासी हो जाता।

29जब मेरे शत्रु नष्ट हुये तो मैं प्रसन्न नहीं हुआ, जब मेरे शत्रुओं पर विपत्ति पड़ी तो, मैं उन पर नहीं हँसा।

30मैंने अपने मुख को अपने शत्रु से बुरे शब्द बोल कर पाप नहीं करने दिया और नहीं चाहा कि उन्हें मृत्यु आ जाये।

31मेरे घर के सभी लोग जानते हैं कि मैंने सदा अनजानों को खाना दिया।

32मैंने सदा अनजानों को अपने घर में बुलाया, ताकि उनको रात में गलियों में सोना न पड़े।

33दूसरे लोग अपने पाप को छुपाने का जतन करते हैं, किन्तु मैंने अपना दोष कभी नहीं छुपाया।

34क्यों? क्योंकि लोग कहा करते हैं कि मैं उससे कभी नहीं डरा। मैं कभी चुप न रहा और मैने कभी बाहर जाने से मना नहीं किया क्योंकि उन लोगों से जो मेरे प्रति बैर रखते हैं कभी नहीं डरा।

35ओह! काश कोई होता जो मेरी सुनता! मुझे अपनी बात समझाने दो। काश! शक्तिशाली परमेश्वर मुझे उत्तर देता। काश! वह उन बातों को लिखता जो मैने गलत किया था उसकी दृष्टि में।

36क्योंकि निश्चय ही मैं वह लिखावट अपने निज कन्धों पर रख लूँगा और मैं उसे मुकुट की तरह सिर पर रख लूँगा।

37मैंने जो कुछ भी किया है, मैं उसे परमेश्वर को समझाऊँगा। मैं परमेश्वर के पास अपना सिर ऊँचा उठाये हुये जाऊँगा, जैसे मैं कोई मुखिया होऊँ।

38यदि जिस खेत पर मैं खेती करता हूँ उसको मैंने चुराया हो और उसको उसके स्वामी से लिया हो जिससे वह धरती अपने ही आँसुओं से गीली हो।

39और यदि मैंने कभी बिना मजदूरों को मजदूरी दिये हुये, खेत की उपज को खाया हो और मजदूरों को हताश किया हो,

40हाँ! यदि इनमें से कोई भी बुरा काम मैंने कियाहो, तो गेहूँ के स्थान पर काँटे और जौ के बजाये खर–पतवार खेतों में उग आयें।" अय्यूब के शब्द समाप्त हुये!

एलीहू का कथन

32 फिर अय्यूब के तीनों मित्रों ने अय्यूब को
उत्तर देने का प्रयत्न करना छोड़ दिया। क्योंकि
अय्यूब निश्चय के साथ यह मानता था कि वह स्वयं
सचमुच दोष रहित हैं। 2वहाँ एलीहू नाम का एक व्यक्ति
भी था। एलीहू बारकेल का पुत्र था। बारकेल बुज़ नाम
के एक व्यक्ति के वंशज था। एलीहू राम के परिवार से
था। एलीहू को अय्यूब पर बहुत क्रोध आया क्योंकि
अय्यूब कह रहा था कि वह स्वयं नेक है और वह
परमेश्वर पर दोष लगा रहा था। 3एलीहू अय्यूब के
तीनों मित्रों से भी नाराज़ था क्योंकि वे तीनों ही अय्यूब
के प्रश्नों का युक्ति संगत उत्तर नहीं दे पाये थे और
अय्यूब को ही दोषी बता रहे थे। इससे तो फिर ऐसा लगा
कि जैसे परमेश्वर ही दोषी था। 4वहाँ जो लोग थे उनमें
एलीहू सबसे छोटा था इसलिए वह तब तक बाट जोहता
रहा जब तक हर कोई अपनी अपनी बात पूरी नहीं
कर चुका। तब उसने सोचा कि अब वह बोलना शुरु
कर सकता हैं। 5एलीहू ने जब यह देखा कि अय्यूब के
तीनों मित्रों के पास कहने को और कुछ नहीं है तो उसे
बहुत क्रोध आया।

6सो एलीहू ने अपनी बात कहना शुरु किया। वह बोला:

"मैं छोटा हूँ और तुम लोग मुझसे बड़े हो, मैं इसलिये तुमको वह बताने में डरता था जो मैं सोचता हूँ।

7मैंने मन में सोचा कि बड़े को पहले बोलना चाहिये, और जो आयु में बड़े है उनको अपने ज्ञान को बाँटना चाहिये।

8किन्तु व्यक्ति में परमेश्वर की आत्मा बुद्धि देतीहै और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का प्राण व्यक्ति को ज्ञान देता है।

9आयु में बड़े व्यक्ति ही नहीं ज्ञानी होते है। क्या बस बड़ी उम्र के लोग ही यह जानते हैं कि उचित क्या है?

10सो इसलिये मैं एलीहू जो कुछ मैं जानता हूँ। तुम मेरी बात सुनों मैं तुम को बताता हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ।

11जब तक तुम लोग बोलते रहे, मैने धैर्य सेप्रतिज्ञा की, मैने तुम्हारे तर्क सुने जिनको तुमने व्यक्त किया था, जो तुम ने चुन चुन कर अय्यबू से कहे।

12जब तुम मार्मिक शब्दों से जतन कर रहे थे अय्यूब को उत्तर देने का तो मैं ध्यान से सुनता रहा। किन्तु तुम तीनों ही यह प्रमाणित नहीं कर पाये कि अय्यूब बुरा है। तुममें से किसी ने भी अय्यूब के तर्को का उत्तर नहीं दिया।

13तुम तीनों ही लोगों को यही नहीं कहना चाहिये था कि तुमने ज्ञान को प्राप्त कर लिया है। लोग नहीं, परमेश्वर निश्चय ही अय्यूब के तर्कों का उत्तर देगा।

14किन्तु अय्यूब मेरे विरोध में नहीं बोल रहा था, इसलिये मैं उन तर्को का प्रयोग नहीं करुँगा जिसका प्रयोग तुम तीनों ने किया था।

15अय्यूब, तेरे तीनो ही मित्र असमंजस में पड़ें हैं, उनके पास कुछ भी और कहने को नहीं है, उनके पास और अधिक उत्तर नहीं हैं।

16ये तीनों लोग यहाँ चुप खड़े हैं और उनके पास उत्तर नहीं है। सो क्या अभी भी मुझको प्रतिक्षा करनी होगी?

17नहीं! मैं भी निज उत्तर दूँगा। मैं भी बताऊँगा तुम को कि मैं क्या सोचता हूँ।

18क्योंकि मेरे पास सहने को बहुत है मेरे भीतर जो आत्मा है, वह मुझको बोलने को विवश करती है।

19मैं अपने भीतर ऐसी दाखमधु सा हूँ, जो शीघ्र ही बाहर उफन जाने को है। मैं उस नयी दाखमधु मशक जैसा हूँ जो शीघ्र ही फटने को है।

20सो निश्चय ही मुझे बोलना चाहिये, तभी मुझे अच्छा लगेगा। अपना मुख मुझे खोलना चाहिये और मुझे अय्यूब की शिकायतों का उत्तर देना चाहिये।

21इस बहस में मैं किसी भी व्यक्ति का पक्ष नहीं लूँगा और मैं किसी का खुशामद नहीं करुँगा।

22मैं नहीं जानता हूँ कि कैसे किसी व्यक्ति की खुशामद की जाती है। यदि मैं किसी व्यक्ति की खुशामद करना जानता तो शीघ्र ही परमेश्वर मुझको दण्ड देता।

33 "किन्तु अय्यूब अब, मेरा सन्देश सुन। उन बातों पर ध्यान दे जिनको मैं कहता हूँ।

2मैं अपनी बात शीघ्र ही कहनेवाला हूँ, मैं अपनी बात कहने को लगभग तैयार हूँ।

3मन मेरा सच्चा है सो मैं सच्चा शब्द बोलूँगा। उन बातों के बारे में जिनको मैं जानता हूँ मैं सत्य कहूँगा।

4परमेश्वर की आत्मा ने मुझको बनाया है, मुझे सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से जीवन मिलता है।

5अय्यूब, सुन और मुझे उत्तर दे यदि तू सोचता है कि तू दे सकता है। अपने उत्तरों को तैयार रख ताकि तू मुझसे तर्क कर सके।

6परमेश्वर के सम्मुख हम दोनों एक जैसे हैं, और हम दोनों को ही उसने मिट्टी से बनायाहै।

7अय्यूब, तू मुझ से मत डर। मैं तेरे साथ कठोर नहीं होऊँगा।

8किन्तु अय्यूब, मैने सुना है कि तू यह कहा करताहैं,

9तूने कहा था, कि मैं अय्यूब, दोषी नहीं हूँ, मैंने पाप नहीं किया, अथवा मैं कुछ भी अनुचित नहीं करता हूँ, मैं अपराधी नहीं हूँ।

10यद्यपि मैंने कुछ भी अनुचित नहीं किया, तो भी परमेश्वर ने कुछ खोट मुझ में पाया है। परमेश्वर सोचता है कि मैं अय्यूब, उसका शत्रुहूँ।

11इसलिये परमेश्वर मेरे पैरों में काठ डालता है, मैं जो कुछ भी करता हूँ वह देखता रहता है।

12किन्तु अय्यूब, मैं तुझको निश्चय के साथ बताता हूँ कि तू इस विषय में अनुचित है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर किसी भी व्यक्ति से अधिक जानता है।

13अय्यूब, तू क्यों शिकायत करता है और क्यों
परमेश्वर से बहस करता है? तू क्यों शिकायत करता
है कि परमेश्वर तुझे हर उस बात के विषय में जो वह
करता है स्पष्ट क्यों नहीं बताता है? 14किन्तु परमेश्वर
निश्चय ही हर उस बात को जिसको वह करता है
स्पष्ट कर देता है। परमेश्वर अलग अलग रीति से
बोलता है किन्तु लोग उसको समझ नहीं पाते हैं।

15-16सम्भव है कि परमेश्वर स्वप्न में लोगों के कान में बोलता हो, अथवा किसी दिव्यदर्शन में रात को जब वे गहरी नींद में हों। जब परमेश्वर की चेतावनियाँ सुनते है तो बहुत डर जाते हैं।

17परमेश्वर लोगों को बुरी बातों को करने से रोकने को सावधान करता है, और उन्हें अहंकारी बनने से रोकने को।

18परमेश्वर लोगों को मृत्यु के देश में जाने से बचाने के लिये सावधान करता है। परमेश्वर मनुष्य को नाश से बचाने के लिये ऐसा करता है।

19अथवा कोई व्यक्ति परमेश्वर की वाणी तब सुन सकता है जब वह बिस्तर में पड़ा हों और परमेश्वर के दण्ड से दु:ख भोगता हो। परमेश्वर पीड़ा से उस व्यक्ति को सावधान करता है। वह व्यक्ति इतनी गहन पीड़ा में होता है, कि उसकी हड्डियाँ दु:खती है।

20फिर ऐसा व्यक्ति कुछ खा नहीं पाता, उस व्यक्ति को पीड़ा होती है इतनी अधिक की उसको सर्वोत्तम भोजन भी नहीं भाता।

21उसके शरीर का क्षय तब तक होता जाता है जब तक वह कंकाल मात्र नहीं हो जाता, और उसकी सब हड्डियाँ दिखने नहीं लग जातीं!

22ऐसा व्यक्ति मृत्यु के देश के निकट होता है, और उसका जीवन मृत्यु के निकट होता है। किन्तु हो सकता है कि कोई स्वर्गदूत हो जो उसके उत्तम चरित्र की साक्षी दे।

23परमेश्वर के पास हजारों ही स्वर्गदूत हैं। फिर वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति के अच्छे काम बतायेगा।

24वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति पर दयालू होगा, वह दूत परमश्वर से कहेगा: इस व्यक्ति की मृत्यु के देश से रक्षा हो! इसका मूल्य चुकाने को एक राह मुझ को मिल गयी है।

25फिर व्यक्ति की देह जवान और सुदृढ़हो जायेगी। वह व्यक्ति वैसा ही हो जायेगा जैसा वह तबथा, जब वह जवान था।

26वह व्यक्ति परमेश्वर की स्तुति करेगा और परमेश्वर उसकी स्तुति का उत्तर देगा। वह फिर परमेश्वर को वैसा ही पायेगा जैसे वह उसकी उपासना करता है, और वह अति प्रसन्न होगा। क्योंकि परमेश्वर उसे निरपराध घोषित कर के पहले जैसा जीवन कर देगा।

27फिर वह व्यक्ति लोगों के सामने स्वीकार करेगा। वह कहेगा: 'मैंने पाप किये थे, भले को बुरा मैंने किया था, किन्तु मुझे इससे क्या मिला!

28परमेश्वर ने मृत्यु के देश में गिरने से मेरी आत्मा को बचाया। मैं और अधिक जीऊँगा और फिर से जीवन का रस लूँगा।'

29परमेश्वर व्यक्ति के साथ ऐसा बार-बार करता है,

30उसको सावधान करने को और उसकी आत्मा को मृत्यु के देश से बचाने को। ऐसा व्यक्ति फिर जीवन का रस लेता है।

31अय्यूब, ध्यान दे मुझ पर, तू बात मेरी सुन, तू चुप रह और मुझे कहने दे।

32अय्यूब, यदि तेरे पास कुछ कहने को है तो मुझको उसको सुनने दे। आगे बढ़ और बता, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष देखना चाहता हूँ।

33अय्यूब, यदि तूझे कुछ नहीं कहना है तो तू मेरी बात सुन। चुप रह, मैं तुझको बुद्धिमान बनना सिखाऊँगा।"

34 फिर एलीहू ने बात को जारी रखते हुये कहा:

2"अरे ओ विवेकी पुरुषों तुम ध्यान से सुनो जो बातें मैं कहता हूँ। अरे ओ चतुर लोगों, मुझ पर ध्यान दो।

3कान उन सब को परखता है जिनको वह सुनताहै, ऐसे ही जीभ जिस खाने को छूती है, उसका स्वाद पता करती है।

4सो आओ इस परिस्थिति को परखें और स्वयं निर्णय करें की उचित क्या है। हम साथ साथ सीखेंगें की क्या खरा है।

5अय्यूब ने कहा: 'मैं निर्दोष हूँ, किन्तु परमेश्वर मेरे लिये निष्पक्ष नहीं है।

6मैं अच्छा हूँ लेकिन लोग सोचते हैं कि मैं बुरा हूँ। वे सोचते हैं कि मैं एक झूठा हूँ और चाहे मैं निर्दोष भी होऊँ फिर भी मेरा घाव नहीं भर सकता।'

7अय्यूब के जैसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसका मुख परमेश्वर की निन्दा से भरा रहता है।

8अय्यूब बुरे लोगों का साथी है और अय्यूब को बुरे लोगों की संगत भाती है।

9क्योंकि अय्यूब कहता है 'यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा मानने का जतन करताहै तो इससे उस व्यक्ति का कुछ भी भला न होगा।

10अरे ओं लोगों जो समझ सकते हो, तो मेरीबात सुनो, परमेश्वर कभी भी बुरा नहीं करता है। सर्वशक्तिशाली परमेश्वर कभी भी बुरा नहीं करेगा।

11परमेश्वर व्यक्ति को उसके किये कर्मो का फल देगा। वह लोगों को जो मिलना चाहिये देगा।

12यह सत्य है परमेश्वर कभी बुरा नहीं करता है। सर्वशक्तिशाली परमेश्वर सदा निष्पक्ष रहेगा।

13परमेश्वर सर्वशक्तिशाली है, धरती का अधिकारी, उसे किसी व्यक्ति ने नहीं बनाया। किसी भी व्यक्ति ने उसे इस समूचे जगत का उत्तरदायित्व नहीं दिया।

14यदि परमेश्वर निश्चय कर लेता कि लोगों से आत्मा और प्राण ले ले,

15तो धरती के सभी व्यक्ति मर जाते, फिर सभी लोग मिट्टी बन जाते।

16यदि तुम लोग विवेकी हो तो तुम उसे सुनोगे जिसे मैं कहता हूँ।

17कोई ऐसा व्यक्ति जो न्याय से घृणा रखता है शासक नहीं बन सकता। अय्यूब, तू क्या सोचता है, क्या तू उस उत्तम और सुदृढ़ परमेश्वर को दोषी ठहरा सकता है?

18केवल परमेश्वर ऐसा है जो राजाओं से कहा करता है कि 'तुम बेकार के हो।' परमेश्वर मुखियों से कहा करता है कि 'तुम दुष्ट हो।'

19परमेश्वर प्रमुखों से अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक प्रेम नहीं करता, और परमेश्वर धनिकों की अपेक्षा गरीबों से अधिक प्रेम नहीं करता है। क्योंकि सभी परमेश्वर ने रचा है।

20सम्भव है रात में कोई व्यक्ति मर जाये, परमेश्वर बहुत शीघ्र ही लोगों को रोगी करता है और वे प्राण त्याग देते हैं। परमेश्वर बिना किसी जतन के शक्तिशाली लोगों को उठा ले जाता है, और कोई भी व्यक्ति उन लोगों को मदद नहीं दे सकता है।

21व्यक्ति जो करता है परमेश्वर उसे देखता है। व्यक्ति जो भी चरण उठाता है परमेश्वर उसे जानता है।

22कोई जगह अंधेरे से भरी हुई नहीं है, और कोई जगह ऐसी नहीं है जहाँ इतना अंधेरा हो कि कोई भी दुष्ट व्यक्ति अपने को परमेश्वर से छिपा पाये।

23किसी व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं है कि वह परमेश्वर से न्यायालय में मिलने का समय निश्चित करे।

24परमेश्वर को प्रश्नों के पूछने की आवश्यकता नहीं, किन्तु परमेश्वर बलशालियों को नष्ट करेगा और उनके स्थान पर किसी और को बैठायेगा।

25सो परमेश्वर जानता है कि लोग क्या करते हैं। इसलिये परमेश्वर रात में दुष्टों को हरायेगा, और उन्हें नष्ट कर देगा।

26परमेश्वर बुरे लोगों को उनके बुरे कर्मो के कारण नष्ट कर देगा और बुरे व्यक्ति के दण्ड को वह सब को देखनेदेगा।

27क्योंकि बुरे व्यक्ति ने परमेश्वर की आज्ञा मानना छोड़ दिया और वे बुरे व्यक्ति परवाह नहीं करते हैं उन कामों को करने की जिनको परमेश्वर चाहता है।

28उन बुरे लोगों ने गरीबों को दु:ख दिया और उनको विवश किया परमेश्वर को सहायता हेतू पुकारने को। गरीब सहायता के लिये पुकारता है, तो परमेश्वर उसकी सुनता है।

29किन्तु यदि परमेश्वर ने गरीब की सहायता न करने का निर्णय लिया तो कोई व्यक्ति परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरा सकता है। यदि परमेश्वर उनसे मुख मोड़ता है तो कोई भी उस को नहीं पा सकता है। परमेश्वर जातियों और समूची मानवता पर शासन करता है।

30तो फिर एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के विरुद्ध है और लोगों को छलता है, तो परमेश्वर उसे राजा बनने नहीं दे सकता है।

31सम्भव है कि कोई परमेश्वर से कहे कि मैं अपराधी
हूँ और फिर मैं पाप नहीं करूँगा।

32हे परमेश्वर, तू मुझे वे बातें सिखा जो मैं नहीं
जानता हूँ। यदि मैंने कुछ बुरा किया तो फिर, मैं उसको
नहीं करूँगा। 33किन्तु अय्यूब, जब तू बदलने को मना
करताहै, तो क्या परमेश्वर तुझे वैसा प्रतिफल दे, जैसा
प्रतिफल तू चाहता है? यह तेरा निर्णय है यह मेरा नहीं
है। तू ही बता कि तू क्या सोचता है?

34कोई भी व्यक्ति जिसमें विवेक है और जो समझता
है वह मेरे साथ सहमत होगा। कोई भी विवेकी जन जो
मेरी सुनता, वह कहेगा,

35अय्यूब, अबोध व्यक्ति के जैसी बातें करता है, जो
बाते अय्यूब करता है उनमें कोई तथ्य नहीं।

36मेरी यह इच्छा है कि अय्यूब को परखने को और
भी अधिक कष्ट दिये जाये। क्यों? क्योंकि अय्यूब हमें
ऐसा उत्तर देता है, जैसा कोई दुष्ट जन उत्तर देता हो।

37अय्यूब पाप पर पाप किए जाता है और उस पर
उसने बगावत की। तुम्हारे ही सामने वह परमेश्वर को
बहुत बहुत बोल कर कलंकित करता रहता है!"

35 एलीहू कहता चला गया। वह बोला:
2"अय्यूब, यह तेरे लिये कहना उचित नहीं
की 'मैं अय्यूब, परमेश्वर के विरुद्ध न्याय पर है।'

3अय्यूब, तू परमेश्वर से पूछता है कि हे परमेश्वर,
मेरा पाप तुझे कैसे हानि पहुँचाता है? और यदि मैं पाप
न करुँ तो कौन सी उत्तम वस्तु मुझ को मिल जाती है?

4अय्यूब, मैं (एलीहू) तुझको और तेरे मित्रों को जो
यहाँ तेरे साथ हैं उत्तर देना चाहता हूँ।

5अय्यूब! उपर देख आकाश में दृष्टि उठा कि बादल
तुझसे अधिक ऊँचें हैं।

6अय्यूब, यदि तू पाप करें तो परमेश्वर का कुछ नहीं
बिगड़ता, और यदि तेरे पाप बहुत हो जायें तो उससे
परमेश्वर का कुछ नहीं होता।

7अय्यूब, यदि तू भला है तो इससे परमेश्वर का भला
नहीं होता, तुझसे परमेश्वर को कुछ नहीं मिलता।

8अय्यूब,तेरे पाप स्वयं तुझ जैसे मनुष्य को हानि
पहुँचाते हैं, तेरे अच्छे कर्म बस तेरे जैसे मनुष्य का ही
भला करते हैं।

9लोगों के साथ जब अन्याय होता है और बुरा व्यवहार
किया जाता है, तो वे मदद को पुकारते हैं, वे बड़े बड़ों
की सहायता पाने को दुहाई देते हैं।

10किन्तु वे परमेश्वर से सहायता नहीं माँगते। वे नहीं
कहते हैं कि, 'परमेश्वर जिसने हम को रचा है वह
कहाँ हैं? परमेश्वर जो हताश जन को आशा दिया
करता है वह कहाँ है?'

11वे ये नहीं कहा करते कि, 'परमेश्वर जिसने पशु
पक्षियों से अधिक बुद्धिमान मनुष्य को बनाया है वह
कहाँ है?'

12किन्तु बुरे लोग अभिमानी होते है, इसलिये यदि वे
परमेश्वर की सहायता पाने को दुहाई दें तो उन्हें उत्तर
नहीं मिलता है।

13यह सच है कि परमेश्वर उनकी व्यर्थ की दुहाई
को नहीं सुनेगा। सर्वशक्तिशाली परमेश्वर उन पर ध्यान
नहीं देगा।

14अय्यूब, इसी तरह परमेश्वर तेरी नहीं सुनेगा, जब
तू यह कहता है कि वह तुझको दिखाई नहीं देता और
तू उससे मिलने के अवसर की प्रतिज्ञा में है, और यह
प्रमाणित करने की तू निर्दोष है।

15अय्यूब, तू सोचता है कि परमेश्वर दुष्टों को दण्ड
नहीं देता है और परमेश्वर पाप पर ध्यान नहीं देता है।

16इसलिये अय्यूब निज व्यर्थ बातें करता रहता है।
अय्यूब ऐसा व्यवहार कर रहा है कि जैसे वह महत्वपूर्ण
है। किन्तु यह देखना कितना सरल है कि अय्यूब नहीं
जानता कि वह क्या कह रहा है।"

36 एलीहू ने बात जारी रखते हुए कहा:
2"अय्यूब, मेरे साथ थोड़ी देर और धीरज
रख। मैं तुझको दिखाऊँगा की परमेश्वर के पक्ष में
अभी कहने को और है।

3मैं अपने ज्ञान को सबसे बाटूँगा। मुझको परमेश्वर
ने रचा है। मैं जो कुछ भी जानता हूँ मैं उस का प्रयोग
तुझको यह दिखाने के लिये करूँगा कि परमेश्वर
निष्पक्ष है।

4अय्यूब, तू यह निश्चय जान कि जो कुछ मैं
कहता हूँ, वह सब सत्य है। मैं बहुत विवेकी हूँ और मैं
तेरे साथ हूँ।

5परमेश्वर शक्तिशाली है किन्तु वह लोगों से घृणा
नहीं करता है। परमेश्वर सामर्थी है और विवेकपूर्ण है।

6परमेश्वर दुष्ट लोगों को जीने नहीं देगा और परमेश्वर
सदा दीन लोगों के साथ खरा व्यवहार करता है।

7वे लोग जो उचित व्यवहार करते हैं, परमेश्वर
उनका ध्यान रखता है। वह राजाओं के साथ उन्हें
सिंहासन देता है और वे सदा आदर पाते हैं।

8किन्तु यदि लोग दण्ड पाते हों और बेड़ियों में जकड़े
हों। यदि वे पीड़ा भुगत रहे हों और संकट में हों।

9तो परमेश्वर उनको बतायेगा कि उन्होंने कौन सा
बुरा काम किया है। परमेश्वर उन को बतायेगा कि
उन्होंने पाप किये हैं और वे अहंकारी रहे थे।

10परमेश्वर उनको उसकी चेतावनी सुनने को विवश
करेगा। वह उन्हें पाप करने को रोकने का आदेश
देगा।

11यदि वे लोग परमेश्वर की सुनेंगे और उसका
अनुसरण करेंगे तो परमेश्वर उनको सफल बनायेगा।

12किन्तु यदि वे लोग परमेश्वर की आज्ञा नकारेंगे तो
वे मृत्यु के जगत में चले जायेंगे, वे अपने अज्ञान के
कारण मर जायेंगे।

13ऐसे लोग जिनको परवाह परमेश्वर की वे सदा कड़वाहट से भरे रहे है। यहाँ तक कि जब परमेश्वर उनको दण्ड देताहैं, वे परमेश्वर से सहारा पाने को विनती नहीं करते।

14ऐसे लोग जब जवान होंगे तभी मर जायेंगे। वे अभी भ्रष्ट लोगों के साथ शर्म से मरेंगे।

15किन्तु परमेश्वर दुःख पाते लोगों को विपत्तियों से बचायेगा। परमेश्वर लोगों को जगाने के लिए विपदाएं भेजता है ताकि लोग उसकी सुने।

16अय्यूब, परमेश्वर तुझको तेरी विपत्तियों से दूर करके तुझे सहारा देना चाहता है। परमेश्वर तुझे एक विस्तृत सुरक्षित स्थान देना चाहता है और तेरी मेज पर भरपूर खाना रखना चाहता है।

17किन्तु अब अय्यूब, तुझे वैसा ही दण्ड मिल रहा है, जैसा दण्ड मिला करता है दुष्टों को, तुझको परमेश्वर का निर्णय और खरा न्याय जकड़े हुए है।

18अय्यूब, तू अपनी नकेल धन दौलत के हाथ में न दे कि वह तुझसे बुरा काम करवाये। अधिक धन के लालच से तू मूर्ख मत बन।

19तू ये जान ले कि अब न तो तेरा समूचा धन तेरी सहायता कर सकता है और न ही शक्तिशाली व्यक्ति तेरी सहायता कर सकते हैं।

20तू रात के आने की इच्छा मत कर जब लोग रात में छिप जाने का प्रयास करते हैं। वे सोचते हैं कि वे परमेश्वर से छिप सकते हैं।

21अय्यूब, बुरा काम करने से तू सावधान रह। तुझ पर विपत्तियाँ भेजी गई हैं ताकि तू पाप को ग्रहण न करे।

22देख, परमेश्वर की शक्ति उसे महान बनाती है। परमेश्वर सभी से महानतम शिक्षक है।

23परमेश्वर को क्या करना है, कोई भी व्यक्ति सको बता नहीं सकता। कोई भी उससे नहीं कह सकता कि परमेश्वर तूने बुरा किया है।

24परमेश्वर के कर्मो की प्रशंसा करना तू मत भूल। लोगों ने गीत गाकर परमेश्वर के कामों की प्रशंसा की
है। 25परमेश्वर के कर्म को हर कोई व्यक्ति देख सकता
है। दूर देशों के लोग उन कर्मो को देख सकते हैं।

26यह सच है कि परमेश्वर महान है। उस की महिमा को हम नहीं समझ सकते हैं। परमेश्वर के वर्षो की संख्या को कोई गिन नहीं सकता।

27परमेश्वर जल को धरती से उपर उठाता है और उसे वर्षा के रूप में बदल देता है।

28परमेश्वर बादलों से जल बरसाता है, और भरपूर वर्षा लोगों पर गिरती हैं।

29कोई भी व्यक्ति नहीं समझ सकता कि परमेश्वर कैसे बादलों को बिखराता है, और कैसे बिजलियाँ आकाश में कड़कती हैं।

30देख, परमेश्वर कैसे अपनी बिजली को आकाश में चारों ओर बिखेरता है और कैसे सागर के गहरे भाग को ढक देता है।

31परमेश्वर राष्ट्रों को नियंत्रण में रखने और उन्हें भरपूर भोजन देने के लिये इन बादलों का उपयोग करता है।

32परमेश्वर अपने हाथों से बिजली को पकड़ लेता है और जहाँ वह चाहता है, वहाँ बिजली को गिरने का आदेश देता है।

33गर्जन, तूफान के आने की चेतावनी देता है। यहाँ तक की पशु भी जानते हैं कि तूफान आ रहा है।

37 "हे अय्यूब, जब इन बातों के विषय में मैं सोचता हूँ, मेरा हृदय बहुत जोर से धड़कताहै।

2हर कोई सुनों, परमेश्वर की वाणी बादल की गर्जन जैसी सुनाई देती हैं। सुनों गरजती हुई ध्वनि को जो परमेश्वर के मुख से आ रही है।

3परमेश्वर अपनी बिजली को सारे आकाश से होकर चमकने को भेजता है। वह सारी धरती के ऊपर चमका करती है।

4बिजली के कौंधने के बाद परमेश्वर की गर्जन भरी वाणी सुनी जा सकती है। परमेश्वर अपनी अद्भुत वाणी के साथ गरजता है। जब बिजली कौंधती है तब परमेश्वर की वाणी गरजती है।

5परमेश्वर की गरजती हुई वाणी अद्भुत है। वह ऐसे बड़े कर्म करता है, जिन्हें हम समझ नहीं पाते हैं।

6परमेश्वर हिम से कहता है 'तुम धरती पर गिरो' और परमेश्वर वर्षा से कहता है 'तुम धरती पर जोर से बरसो।'

7परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि सभी व्यक्ति जिनको उसने बनाया है जान जाये कि वह क्या कर सकता है। वह उसका प्रमाण है।

8पशु अपने खोहों में भाग जाते हैं, और वहाँ ठहरे
रहते हैं। 9दक्षिण से तूफान आते हैं, और उत्तर से सर्दी
आया करती है।

10परमेश्वर का श्वास बर्फ को रचता है, और सागरों को जमा देता है।

11परमेश्वर बादलों को जल से भरा करता है, और बिजली को बादल के द्वारा बिखेरता है।

12परमेश्वर बादलों को आने देता है कि वह उड़ कर सब कहीं धरती के ऊपर छा जाये और फिर बादल वहीं करते हैं जिसे करने का आदेश परमेश्वर
ने उन्हें दिया है। 13परमेश्वर बाढ़ लाकर लोगों को दण्ड
देने अथवा धरती को जल देकर अपना प्रेम दर्शाने के लिये बादलों को भेजता है।

14अय्यूब, तू क्षण भर के लिये रुक और सुन। रुक जा और सोच उन अद्भुत कार्यो के बारे में जिन्हें परमेश्वर किया करता हैं।

15अय्यूब, क्या तू जानता है कि परमेश्वर बादलों पर कैसे काबू रखता है? क्या तू जानता है कि परमेश्वर अपनी बिजली को क्यों चमकाता है?

16क्या तू यह जानता है कि आकाश में बादल कैसे लटके रहते हैं। ये एक उदारहण मात्र हैं। परमेश्वर का ज्ञान सम्पूर्ण है और ये बादल परमेश्वर की अद्‌भुत कृति हैं।

17किन्तु अय्यूब, तुम ये बातें नहीं जानते। तुम बस इतना जानते है कि तुमको पसीना आता है और तेरे वस्त्र तुझ से चिपके रहते हैं, और सब कुछ शान्त व स्थिर रहता है, जब दक्षिण से गर्म हवा आती है।

18अय्यूब, क्या तू परमेश्वर की मदद आकाश को फैलाने में और उसे झलकाये गये दर्पण की तरह चमकाने में कर सकता है?

19अय्यूब, हमें बता कि हम परमेश्वर से क्या कहें। हम उससे कुछ भी कहने को सोच नहीं पाते क्योंकि हम पर्याप्त कुछ भी नहीं जानते।

20क्या परमेश्वर से यह कह दिया जाये कि मैं उस के विरोध में बोलना चाहता हूँ। यह वैसे ही होगा जैसे अपना विनाश माँगना।

21देख, कोई भी व्यक्ति चमकते हुए सूर्य को नहीं देख सकता। जब हवा बादलों को उड़ा देती है उस के बाद वह बहुत उजला और चमचमाता हुआ होता है।

22और परमेश्वर भी उसके समान है। परमेश्वर की सुनहरी महिमा चमकती है। परमेश्वर अद्‌भुत महिमा के साथ उत्तर से आता है।

23सर्वशक्तिमान परमेश्वर सचमुच महान है, हम परमेश्वर को नहीं जान सकते परमेश्वर सदा ही लोगों के साथ न्याय, और निष्पक्षता के साथ व्यवहार करता हैं।

24इसलिए लोग परमेश्वर का आदर करते हैं, किन्तु परमेश्वर उन अभिमानी लोगों को आदर नहीं देता है जो स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं"।

38 फिर यहोवा ने तूफान में से अय्यूब को उत्तर
दिया। परमेश्वर ने कहा: 2"यह कौन व्यक्ति
है जो मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है?"

3अय्यूब, तुम पुरुष की भाँति सुदृढ बनों। जो प्रश्न मैं
पूछूँ उस का उत्तर देने को तैयार हो जाओ। 4अय्यूब,
बताओ तुम कहाँ थे, जब मैंने पृथ्वी की रचना की थी?
यदि तू इतना समझदार है तो मुझे उत्तर दे।

5अय्यूब, इस संसार का विस्तार किसने निश्चित किया था? किसने संसार को नापने के फीते से नापा?

6इस पृथ्वी की नींव किस पर रखी गई है? किसने पृथ्वी की नींव के रूप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्थर को रखा है?

7जब ऐसा किया था तब भोर के तारों ने मिलकर गाया और स्वर्गदूत ने प्रसन्न होकर जयजयकार किया।

8अय्यूब, जब सागर धरती के गर्भ से फूट पड़ाथा, तो किसने उसे रोकने के लिये द्वार को बन्द किया था।

9उस समय मैंने बादलों से समुद्र को ढक दिया और अन्धकार में सागर को लपेट दिया था(जैसे बालक को चादर में लपेटा जाता है।)

10सागर की सीमाऐं मैंने निश्चित की थीं और उसे ताले लगे द्वारों के पीछे रख दिया था।

11मैंने सागर से कहा 'तू यहाँ तक आ सकता है किन्तु और अधिक आगे नहीं। तेरी अभिमानी लहरें यहाँ पर रुक जायेंगी।'

12अय्यूब, क्या तूने कभी अपनी जीवन में भोर को आज्ञा दी है उग आने और दिन को आरम्भ करने की?

13अय्यूब, क्या तूने कभी प्रात: के प्रकाश को धरती पर छा जाने को कहा है और क्या कभी उससे दुष्टों के छिपने के स्थान को छोड़ने के लिये विवश करने को कहा है?

14प्रात: का प्रकाश पहाड़ों व घाटियों को देखने लायक बना देता है। जब दिन का प्रकाश धरती पर आता है तो उन वस्तुओं के रूप वस्त्र की सलवटों की तरह उभर कर आते हैं। वे स्थान रूप को नम मिट्‌टी की तरह जो दबोई गई मुहर की ग्रहण करते हैं।

15दुष्ट लोगों को दिन का प्रकाश अच्छा नहीं लगता क्योंकि जब वह चमचमाता है, तब वह उनको बुरे काम करने से रोकता है।

16अय्यूब, बता क्या तू कभी सागर के गहरे तल में गया है जहाँ से सागर शुरु होता है? क्या तू कभी सागर के तल पर चला है?

17अय्यूब, क्या तूने कभी उस फाटकों को देखाहै, जो मृत्यु लोक को ले जाते हैं? क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा जो उस मृत्यु के अन्धेरे स्थान को ले जाते हैं?

18अय्यूब, तू जानता है कि यह धरती कितनी बड़ी है? यदि तू ये सब कुछ जानता है, तो तू मुझकों बता दे।

19अय्यूब, प्रकाश कहाँ से आता है? और अन्धकार कहाँ से आता है?

20अय्यूब, क्या तू प्रकाश और अन्धकार को ऐसी जगह ले जा सकता है जहाँ से वे आये है? जहाँ वे रहते हैं वहाँ पर जाने का मार्ग क्या तू जानता है?

21अय्यूब, मुझे निश्चय है कि तुझे सारी बातेंमालूम हैं क्योंकि तू बहुत ही बूढा और बुद्धिमान है। जब वस्तुऐं रची गई थी तब तू वहाँ था।

22अय्यूब, क्या तू कभी उन कोठियारों में गया हैं जहाँ मैं हिम और ओलों को रखा करता हूँ?

23मैं हिम और ओलों को विपदा के काल और युद्ध लड़ाई के समय के लिये बचाये रखता हूँ।

24अय्यूब, क्या तू कभी ऐसी जगह गया है, जहाँ से सूरज उगता है और जहाँ से पुरवाई सारी धरती पर छा जाने के लिये आती है?

25अय्यूब, भारी वर्षा के लिये आकाश में किसने नहर खोदी है, और किसने भीषण तूफान का मार्ग बनाया है?

26अय्यूब, किसने वहाँ भी जल बरसाया, जहाँ कोई भी नहीं रहता है?

27वह वर्षा उस खाली भूमि के बहुतायत से जल देता है और घास उगनी शुरु हो जाती है।

28अय्यूब, क्या वर्षा का कोई पिता है? ओस की बूँदे कहाँ से आती हैं?

29अय्यूब, हिम की माता कौन है? आकाश से पाले को कौन उत्पन्न करता है?

30पानी जमकर चट्टान सा कठोर बन जाता है, और सागर की ऊपरी सतह जम जाया करतीहै।

31अय्यूब, सप्तर्षि तारों को क्या तू बाँध सकताहै? क्या तू मृगशिरा का बन्धन खोल सकता है?

32अय्यूब, क्या तू तारा समूहों को उचित समय पर उगा सकता है, अथवा क्या तू भालू तारा समूह की उसके बच्चों के साथ अगुवाई कर सकता है?

33अय्यूब क्या तू उन नियमों को जानता है, जो नभ का शासन करते हैं? क्या तू उन नियमों को धरती पर लागू कर सकता है?

34अय्यूब, क्या तू पुकार कर मेघों को आदेश दे सकता है, कि वे तुझको भारी वर्षा के साथ घेर ले।

35अय्यूब बता, क्या तू बिजली को जहाँ चाहता वहाँ भेज सकता है? और क्या तेरे निकट आकर बिजली कहेगी ‘अय्यूब, हम यहाँ है बता तू क्या चाहता है?’

36मनुष्य के मन में विवेक को कौन रखता हैं, और बुद्धि को कौन समझदारी दिया करताहै?

37अय्यूब, कौन इतना बलवान है जो बादलों को गिन ले और उनको वर्षा बरसाने से रोक दे?

38वर्षा धूल को कीचड़ बना देती है और मिट्टी के लौंदे आपस में चिपक जाते हैं।

39अय्यूब, क्या तू सिंहनी का भोजन पा सकताहै? क्या तू भूखे युवा सिंह का पेट भर सकता है?

40वे अपनी खोहों में पड़े रहते हैं अथवा झाड़ियों में छिप कर अपने शिकार पर हमला करने के लिये बैठते हैं।

41अय्यूब, कौवे के बच्चे परमेश्वर की दुहाई देतेहै, और भोजन को पाये बिना वे इधर उधर घूमतें रहते हैं तब उन्हें भोजन कौन देता है?

39 “अय्यूब, क्या तू जानता है कि पहाड़ी बकरी कब ब्याती हैं? क्या तूने कभी देखा जब हिरणी ब्याती है?

2अय्यूब, क्या तू जानता है पहाड़ी बकरियाँ और माता हरिणियाँ कितने महीने अपने बच्चे को गर्भ में रखती हैं? क्या तुझे पता है कि उनका ब्याने का उचित समय क्या है?

3वे लेट जाती हैं और बच्चों को जन्म देती हैं, तब उनकी पीड़ा समाप्त हो जाती है।

4पहाड़ी बकरियों और हरिणी माँ के बच्चे खेतोंमें हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं। फिर वे अपनी माँ को छोड़ देते हैं, और फिर लौट कर वापस नहीं आते।

5अय्यूब, जंगली गधों को कौन आजाद छोड़ देता है? किसने उसके रस्से खोले और उनको बन्धन मुक्त किया?

6यह मैं (यहोवा) हूँ जिसने बनैले गधे को घर के रूप में मरुभूमि दिया। मैंने उनको रहने के लिये रेही धरती दी।

7बनैला गधा शोर भरे नगरों के पास नहीं जाताहै और कोई भी व्यक्ति उसे काम करवाने के लिये नहीं साधता है।

8बनैले गधे पहाड़ों में घूमते हैं और वे वहीं घास चरा करते हैं। वे वहीं पर हरी घास चरने को ढूँढते रहते हैं।

9अय्यूब, बता, क्या कोई जंगली सांड़ तेरी सेवा के लिये राजी होगा? क्या वह तेरे खलिहान में रात को रुकेगा?

10अय्यूब, क्या तू जंगली सांड़ को रस्से से बाँध कर अपना खेत जुता सकता है? क्या घाटी में तेरे लिये वह पटेला करेगा?

11अय्यूब, क्या तू किसी जंगली सांड़ के भरोसे रह सकता है? क्या तू उस की शक्ति से अपनी सेवा लेने की अपेक्षा रखता है?

12क्या तू उसके भरोसे है कि वह तेरा अनाज इकट्ठा तेरे और उसे तेरे खलिहान में ले जाये?

13शुतुरमुर्ग जब प्रसन्न होता है वह अपने पंख फड़फड़ाता है किन्तु शुतुरमुर्ग उड़ नहीं सकता। उस के पर और पंख सारस के जैसे नहीं होते।

14शुतुरमुर्ग धरती पर अण्डे देती है, और वे रेत में सेये जाते हैं।

15किन्तु शुतुरमुर्ग भूल जाता है कि कोई उस के अण्डों पर से चल कर उन्हें कुचल सकताहै, अथवा कोई बनैला पशु उनको तोड़ सकता है।

16शुतुरमुर्ग अपने ही बच्चों पर निर्दयता दिखाताहै जैसे वे उसके बच्चे नहीं है। यदि उसके बच्चे मर भी जाये तो भी उसको उसकी चिन्ता नहीं है।

17ऐसा क्यों? क्योंकि मैंने (परमेश्वर) उस शुतुरमुर्ग को विवेक नहीं दिया था। शुतुरमुर्ग मूर्ख होता है, मैंने ही उसे ऐसा बनायाहै।

18किन्तु जब शुतुरमुर्ग दौड़ने को उठती है तब वह घोड़े और उसके सवार पर हँसती है, क्योंकि वह घोड़े से अधिक तेज भाग सकती है।

19अय्यूब, बता क्या तूने घोड़े को बल दिया और क्या तूने ही घोड़े की गर्दन पर अयाल जमाया है?

20अय्यूब, बता जैसे टिड्डी कूद जाती है क्या तूने वैसा घोड़े को कुदाया है? घोड़ा घोर स्वर में हिनहिनाता है और लोग डर जाते हैं।

21घोड़ा प्रसन्न है कि वह बहुत बलशाली है और अपने खुर से वह धरती को खोदा करता है। युद्ध में जाता हुआ घोड़ा तेज दौड़ता है।

22घोड़ा डर की हँसी उड़ाता है क्योंकि वह कभी नहीं डरता । घोड़ा कभी भी युद्ध से मुख नहीं मोड़ता है।

23घोड़े की बगल में तरकस थिरका करते हैं। उसके सवार के भाले और हथियार धूप में चमचमाया करते हैं।

24घोड़ा बहुत उत्तेजित है, मैदान पर वह तीव्र गति से दौड़ता है। घोड़ा जब बिगुल की आवाज सुनता है तब वह शान्त खड़ा नहीं रह सकता।

25जब बिगुल की ध्वनि होती है घोड़ा कहा करताहै ‘अहा!’ वह बहुत ही दूर से युद्ध को सूँघ लेता है। वह सेना के नायकों के घोष भरे आदेश और युद्ध के अन्य सभी शब्द सुन लेता है।

26अय्यूब, क्या तूने बाज को सिखाया अपने पंखो को फैलाना और दक्षिण की ओर उड़ जाना?

27अय्यूब, क्या तू उकाब को उड़ने की और ऊँचे पहाड़ों में अपना घोंसला बनाने की आज्ञा देता है?

28उकाब चट्टान पर रहा करता है। उसका किला चट्टान हुआ करती है।

29उकाब किले से अपने शिकार पर दृष्टि रखताहै। वह बहुत दूर से अपने शिकार को देख लेताहै।

30उकाब के बच्चे लहू चाटा करते हैं और वे मरी हुई लाशों के पास इकट्ठे होते हैं।”

40 यहोवा ने अय्यूब से कहा:
2“अय्यूब तूने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से तर्क
किया। तूने बुरे काम करने का मुझे दोषी ठहराया।
अब तू मुझको उत्तर दे।”

3इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए परमेश्वर से कहा:

4“मैं तो कुछ कहने के लिये बहुत ही तुच्छ हूँ। मैं तुझसे क्या कह सकता हूँ? मैं तुझे कोई उत्तर नहीं दे सकता। मैं अपना हाथ अपने मुख पर रख लूँगा।

5मैंने एक बार कहा किन्तु अब मैं उत्तर नहींदूँगा। फिर मैंने दोबारा कहा किन्तु अब और कुछ नहीं बोलूँगा।”

6इस के बाद यहोवा ने आँधी में बोलते हुए अय्यूब से कहा।

7अय्यूब, तू पुरुष की तरह खड़ा हो, मैं तुझ से कुछ प्रश्न पूछूँगा और तू उन प्रश्नों का उत्तर मुझे देगा।

8अय्यूब क्या तू सोचता है कि मैं न्यायपूर्ण नहींहूँ? क्या तू मुझे बुरा काम करने का दोषी मानता है ताकि तू यह दिखा सके कि तू उचित है?

9अय्यूब, बता क्या मेरे शस्त्र इतने शक्तिशाली हैं जितने कि मेरे शस्त्र हैं? क्या तू अपनी वाणी को उतना ऊँचा गरजा सकता है जितनी मेरी वाणी है?

10यदि तू वैसा कर सकता है तो तू स्वयं को आदर और महिमा दे तथा महिमा और उज्वलता को उसी प्रकार धारण कर जैसे कोई वस्त्र धारण करता है।

11अय्यूब, यदि तू मेरे समान है, तो अभिमानी लोगों से घृणा कर। अय्यूब, तू उन अहंकारी लोगों पर अपना क्रोध बरसा और उन्हें तू विनम्र बना दे।

12हाँ, अय्यूब, उन अहंकारी लोगों को देख और तू उन्हें विनम्र बना दे। उन दुष्टों को तू कुचल दे जहाँ भी वे खड़े हों।

13तू सभी अभिमानियों को मिट्टी में गाड़ दे और उनकी देहों पर कफन लपेट कर तू उनको उनकी कब्रों में रख दे।

14अय्यूब, यदि तू इन सब बातों को कर सकताहै तो मैं यह तेरे सामने स्वीकार करूँगा कि तू स्वयं को बचा सकता है।

15अय्यूब, देख तू, उस जलगज को मैंने (परमेश्वर) ने बनाया है और मैंने ही तुझे बनाया है। जलगज उसी प्रकार घास खाती है, जैसे गाय घास खाती है।

16जलगज के शरीर में बहुत शक्तिहोती है। उसके पेट की माँसपेशियाँ बहुत शक्तिशाली होती हैं।

17जलगज की पूँछ दृढ़ता से ऐसी रहती है जैसा देवदार का वृक्ष खड़ा रहता है। उसके पैर की माँसपेशियाँ बहुत सुदृढ़ होती हैं।

18जल गज की हड्डियाँ काँसे की भाँति सुदृढहोतीहैं, और पाँव उसके लोहे की छड़ों जैसे।

19जल गज पहला पशु है जिसे मैंने (परमेश्वर) बनाया है किन्तु मैं उस को हरा सकता हूँ।

20जल गज जो भोजन करता है उसे उसको वे पहाड़ देते हैं जहाँ बनैले पशु विचरते हैं।

21जल गज कमल के पौधे के नीचे पड़ा रहताहै और कीचड़ में सरकण्डों की आड़ में छिपा रहता है।

22कमल के पौधे जलगज को अपनी छाया में छिपाते है। वह बाँस के पेड़ों के तले रहता हैं, जो नदी के पास उगा करते है।

23यदि नदी में बाढ़ आ जाये तो भी जल गज भागता नहीं है। यदि यरदन नदी भी उसके मुख पर थपेड़े मारे तो भी वह डरता नहीं है।

24जल गज की आँखों को कोई नहीं फोड़ सकता हैऔर उसे कोई भी जाल में नहीं फँसा सकता।

41 “अय्यूब, बता, क्या तू लिब्यातान (सागर के
दैत्य) को किसी मछली के काँटे से पकड़
सकता है? 2अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की नाक में
नकेल डाल सकता है? अथवा उसके जबड़ों में काँटा
फंसा सकता है?

3अय्यूब, क्या लिब्यातान आजाद होने के लिये तुझसे विनती करेगा? क्या वह तुझसे मधुर बातें करेगा?

4अय्यूब, क्या लिब्यातान तुझसे सन्धि करेगा और सदा तेरी सेवा का तुझे वचन देगा?

5अय्यूब, क्या तू लिब्यातान से वैसे ही खेलेगा जैसे तू किसी चिड़ियाँ से खेलता है? क्या तू उसे रस्से से बांधेगा जिससे तेरी दासियाँ उससे खेल सकें?

6अय्यूब, क्या मछुवारे लिब्यातान को तुझसे खरीदने का प्रयास करेंगे? क्या वे उसको काटेंगे और उन्हें व्यापारियों के हाथ बेच सकेंगे?

7अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की खाल में और माथे पर भाले फेंक सकता है?

8अय्यूब, लिब्यातान पर यदि तू हाथ डाले तो जो भयंकर युद्ध होगा, तू कभी भी भूल नहीं पायेगा और फिर तू उससे कभी युद्ध न करेगा।

9और यदि तू सोचता है कि तू लिब्यातान को हरा देगा तो इस बात को तू भूल जा। क्योंकि इसकी कोई आशा नहीं है। तू तो बस उसे देखने भर से ही डर जायेगा।

10कोई भी इतना वीर नहीं है, जो लिब्यातान को जगा कर भड़काये। तो फिर अय्यूब बता, मेरे विरोध में कौन टिक सकता है?

11मुझ को (परमेश्वर को) किसी भी व्यक्ति कुछ नहीं देना है। सारे आकाश के नीचे जो कुछ भी है, वह सब कुछ मेरा ही है।

12अय्यूब, मैं तुझको लिब्यातान के पैरों के विषय में बताऊँगा। मैं उसकी शक्ति और उस के रूप की शोभा के बारे में बताऊँगा।

13कोई भी व्यक्ति उसकी खाल को भेद नहींसकता। उसकी खाल दुहरा कवच के समान हैं।

14लिब्यातान को कोई भी व्यक्ति मुख खोलने के लिये विवश नहीं कर सकता है। उसके जबड़े के दाँत सभी को भयभीत करते हैं।

15लिब्यातान की पीठ पर ढालों की पंक्तियाँ होती हैं, जो आपस में कड़ी छाप से जुड़े होते हैं।

16ये ढ़ाले आपस में इतनी सटी होती हैं कि हवा तक उनमें प्रवेश नहीं कर पाती है।

17ये ढाले एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। वे इतनी मजबूती से एक दूसरे से जुडी हुई है कि कोई भी उनको उखाड़ कर अलग नहीं कर सकता।

18लिब्यातान जब छींका करता है तो ऐसा लगता है जैसे बिजली सी कौंध गई हो। आँखे उसकी ऐसी चमकती है जैसे कोई तीव्र प्रकाश हो।

19उसके मुख से जलती हुई मशालें निकलती हैं, और उससे आग की चिंगारियाँ बिखरती हैं।

20लिब्यातान के नथुनों से धुआँ ऐसा निकलताहै, जैसे उबलती हुई हाँडी से भाप निकलता हो।

21लिब्यातान की फूँक से कोपले सुलग उठते हैं और उसके मुख से डर कर दूर भाग जाया करते हैं।

22लिब्यातान की शक्ति उसके गर्दन में रहतीहै, और लोग उससे डर कर दूर भाग जाया करतेहैं।

23उसकी खाल में कही भी कोमल जगह नहीं हैं। वह धातु की तरह कठोर हैं।

24लिब्यातान का हृदय चट्टान की तरह होता है, उसको भय नहीं है। वह चक्की के नीचे के पाट सा सुदृढ़ है।

25लिब्यातान जागता है, बली लोग डर जाते हैं। लिब्यातान जब पूँछ फटकारता है, तो वो लोग भाग जाते हैं।

26लिब्यातान पर जैसे ही भाले, तीर और तलवार पड़ते है वे उछल कर दूर हो जाते है।

27लोहे की मोटी छड़े वह तिनसे सा और काँसे को सड़ी लकड़ी सा तोड़ देता है।

28बाण लिब्यातान को नहीं भगा पाते हैं, उस पर फेंकी गई चट्टानेसूखे तिनके की भाँति हैं।

29लिब्यातान पर जब मुगदर पड़ता है तो उसे ऐसा लगता है मानों वह कोई तिनका हो। जब लोग उस पर भाले फेंकते हैं, तब वह हँसा करता है।

30लिब्यातान की देह के नीचे की खाल टूटे हुऐ बर्तन के कठोर व पैने टुकड़े सा है। वह जब चलता है तो कीचड़ में ऐसे छोड़ता है मानों खलिहान में पाटा लगाया गया हो।

31लिब्यातान पानी को यूँ मथता है, मानों कोई हँड़ियाँ उबलती हो। वह ऐसे बुलबुले बनाता है मानों पात्र में उबलता हुआ तेल हो।

32लिब्यातान जब सागर में तैरता है तो अपने पीछे वह सफेद झागों जैसी राह छोड़ता है, जैसे कोई श्वेत बालों की विशाल पूँछ हो।

33लिब्यातान सा कोई और जन्तु धरती पर नहीं है। वह ऐसा पशु है जिसे निर्भय बनाया गया।

34वह अत्याधिक गर्वीले पशुओं तक को घृणा से देखता है। सभी जंगली पशुओं का वह राजा हैं।" मैने (यहोवा) लिब्यातान को बनाया है।

अय्यूब का यहोवा को उत्तर

42 इस पर अय्यूब ने यहोवा को उत्तर देते हुएकहा:
2"यहोवा, मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है। तू योजनाऐं बना सकता है और तेरी योजनाओं को कोई भी नहीं बदल सकता और न ही उसको रोका जा सकता है।

3यहोवा, तूने यह प्रश्न पूछा कि 'यह अबोध व्यक्ति कौन है? जो ये मूर्खतापूर्ण बातें कह रहा है?' यहोवा, मैंने उन चीज़ों के बारे में बातें की जिन्हें मैं समझता नहीं था। यहोवा, मैंने उन चीज़ों के बारे में बातें की जो मेरे समझ पाने के लिये बहुत अचरज भरी थी।

4यहोवा, तूने मुझसे कहा 'हे अय्यूब सुन और मैं बोलूँगा। मैं तुझसे प्रश्न पूछूँ गा और तू मुझे उत्तर देगा।'
5यहोवा, बीते हुए काल में मैंने तेरे बारे में सुना था किन्तु स्वयं अपनी आँखों से मैंने तुझे देख लिया है।
6अत: अब मैं स्वयं अपने लिये लज्जित हूँ। यहोवा मुझे खेद है धूल और राख में बैठ कर मैं अपने हृदय और जीवन को बदलने की प्रतिज्ञा करता हूँ।"

यहोवा का अय्यूब की सम्पत्ति को लौटाना

7यहोवा जब अय्यूब से अपनी बात कर चुका तो यहोवा ने तेमान के निवासी एलीपज से कहा: "मैं तुझसे और तेरे दो मित्रों से क्रोधित हूँ क्योंकि तूने मेरे बारे में उचित बातें नहीं कही थीं। किन्तु अय्यूब ने मेरे बारे में उचित बातें कहीं थीं। अय्यूब मेरा दास है।
8इसलिये अब एलीपज तुम सात बैल और सात भेड़ें लेकर मेरे दास अय्यूब के पास जाओ और अपने लिये होमबलि के रुप में उनकी भेंट चढ़ाओ। मेरा सेवक अय्यूब तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा। तब निश्चय ही मैं उसकी प्रार्थना का उत्तर दूँगा। फिर मैं तुम्हें वैसा दण्ड नहीं दूँगा जैसा दण्ड दिया जाना चाहिये था क्योंकि तुम बहुत मूर्ख थे। मेरे बारे मैं तुमने उचित बातें नहीं कहीं जबकि मेरे सेवक अय्यूब ने मेरे बारे में उचित बातें कही थीं।"
9सो तेमान नगर के निवासी एलीपज़ और शूह गाँव के बिल्दद तथा नामात गाँव के निवासी सोपर ने यहोवा की आज्ञा का पालन किया। इस पर यहोवा ने अय्यूब की प्रार्थना सुन ली।
10इस प्रकार जब अय्यूब अपने मित्रों के लिये प्रार्थना कर चुका तो यहोवा ने अय्यूब की फिर से सफलता प्रदान की। परमेश्वर ने जितना उसके पास पहले था, उससे भी दुगुना उसे दे दिया।
11अय्यूब के सभी भाई और बहनें अय्यूब के घर वापस आ गये और हर कोई जो अय्यूब को पहले जानता था, उसके घर आया। अय्यूब के साथ उन सब ने एक बड़ी दावत में खाना खाया। क्योंकि यहोवा ने अय्यूब को बहुत कष्ट दिये थे, इसलिये उन्होंने अय्यूब को सान्त्वना दी। हर किसी व्यक्ति ने अय्यूब को चाँदी का एक सिक्का और सोने की एक अंगूठी भेंट में दीं।
12यहोवा ने अय्यूब के जीवन के पहले भाग से भी अधिक उसके जीवन के पिछले भाग को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। अय्यूब के पास चौदह हजार भेड़ें छ: हजार ऊँट, दो हजार बैल तथा एक हजार गधियाँ हो गयीं।
13अय्यूब के सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ भी हो गयीं।
14अय्यूब ने अपनी सबसे बड़ी पुत्री का नाम रखा यमीमा। दूसरी पुत्री का नाम रखा कसीआ। और तीसरी का नाम रखा केरेन्हप्पूक।
15सारे प्रदेश में अय्यूब की पुत्रियाँ सबसे सुन्दर स्त्रियाँ थीं। अय्यूब ने अपने पुत्रों को साथ अपनी सम्पत्ति का एक भाग अपनी पुत्रियोँ को भी उत्तराधिकार में दिया।
16इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस साल तक और जीवित रहा। वह अपने बच्चों, अपने पोतों, अपने परपोतों और परपोतों की भी संतानों यानी चार पीढ़ियों को देखने के लिए जीवित रहा।
17जब अय्यूब की मृत्यु हुई, उस समय वह बहुत बूढ़ा था। उसे बहुत अच्छा और लम्बा जीवन प्राप्त हुआ था।